

हेलमेट पहनकर दुकानों से माल उड़ाया

इंदौर। विजयनगर थाना क्षेत्र में गुरुवार अलसुबह चोरी की दो अलग-अलग घटनाओं ने सुर्ख्वा व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए। स्क्रीम नंबर 54 में हेलमेटधारी बदमाश ने दो दुकानों से नकदी और सामान पर हाथ साफ कर दिया। वहीं, स्क्रीम नंबर 74 में बुजुर्ग के घर से अंगूठी चोरी होने का मामला भी सामने आया है, जिसमें केयरटेकर पर शक जताया गया है। चोरी की पहली घटना फरियादी राकेश व्यास की दुकान में हुआ। यहां से चोर 12 हजार रुपए नकद सहित अन्य सामान ले गए। दूसरी घटना विजय शिवहरे की 'सेलिब्रेशन गिफ्ट एंड टॉयज' दुकान में हुई। स्क्रीम नंबर 74 में रहने वाले अखिल शर्मा ने बताया कि उसके दादा रामेश्वर की अंगूठी गायब हो गई। दादा चलने-फिरने में असमर्थ हैं और दवा लेकर सो गए थे। जब शाम को उठे तो अंगूठी नहीं थी। इसी दौरान पता चला कि केयरटेकर ब्रह्म उर्फ सोनू, जो अमर टेकरों में रहता है, उस दिन काम पर नहीं आया।

बेहतर ट्रैफिक के लिए डायवर्सन प्लान

इंदौर। नारी शक्ति वंदन बिल मैराथन कार्यक्रम का आयोजन कर 18 अप्रैल को आयोजित किया जाएगा। इसमें लगभग 10 हजार महिलाओं और बच्चों के शामिल होने की संभावना है। इसे देखते हुए ट्रैफिक व्यवस्था सुचारु बनने डायवर्सन प्लान जारी किया है। प्लान अनुसार, सुबह 6 बजे से कार्यक्रम समाप्ति तक राजवाड़ा से गांधी हॉल तक नो व्हीकल जोन रहेगा। सभी वाहन सुभाष चौक से सुभाष चौक पानी की टंकी होते हुए नगर निगम, लोखंडे से डीआरपी लाइन चौराहा, मरीमाता की ओर आ-जा सकेंगे। यशवंत रोड चौराहा, इमामबाड़ा, विजय चाट हाउस, अन्न पान तिराहा, फूट मार्केट, दोना पत्तल गली चौराहा, एमजी रोड चौकी, गणेश कैप मार्ट चौराहा निम्न मार्गों से राजवाड़ा की ओर सभी वाहनों का प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा। कार्यक्रम में सम्मिलित बसें नंदलालपुरा चौराहा, फूट मार्केट चौराहा से महलक्ष्मी मंदिर के पास प्रतिभागियों को उतारेंगी। तत्पश्चात बसें यशवंत रोड चौराहा से होते हुए गांधी भवन, पोद्दार प्लाजा में पार्क की जाएंगी।

एयरपोर्ट की ओर जा सकेंगे- एयरपोर्ट जाने वाले विजय नगर चौराहा, लवकुश चौराहा, सुपर कॉरिडोर चौराहे से जा सकेंगे। खातीपुरा उतार की ओर से मृगनयनी की ओर वाहनों का आवागमन नहीं होगा। ये वाहन संजय सेतु से नंदलालपुरा की ओर जा सकेंगे। समस्त भारी वाहन, कार रीगल चौराहा से राजवाड़ा की ओर नहीं जा सकेंगी। भारी वाहनों, कार के लिए वैकल्पिक मार्ग राजकुमार ब्रिज से भागीरथपुरा चौराहा और पदेल ब्रिज से जवाहर मार्ग की ओर जा सकेंगे।

चार को मिला उत्कृष्ट कार्य का पुरस्कार

इंदौर। ट्रैफिक प्रहरी अभियान अब जनभागीदारी का उदाहरण बनता जा रहा है। इस पहल के तहत जागरूक नागरिक पुलिस के साथ ट्रैफिक प्रबंधन में सहयोग दे रहे हैं। इसी क्रम में चार उत्कृष्ट ट्रैफिक प्रहरीयों बसंत सोनी, अमृतपाल सिंह, माया मंडलोई और मनीष उपाध्याय को सराहनीय योगदान के लिए शौल्ड, प्रशस्ति पत्र और उपहार दिया गया। अब तक 3350 से अधिक नागरिक अभियान से जुड़कर सुविधानुसार चौराहों पर ट्रैफिक संभाल रहे हैं। कमिश्नर ने शहरवासियों से अपील की है कि वे भी इस अभियान से जुड़ें। इच्छुक लोग क्यूआर कोड स्कैन कर गूगल फॉर्म के माध्यम से पंजीकरण कर सकते हैं।

दो तस्करों से मादक पदार्थ जप्त

इंदौर। क्राइम ब्रांच की टीम ने नशे से दूरी है जरूरी अभियान के तहत दो तस्करों को मादक पदार्थ के साथ पकड़ा। टीम ने टिगरिया बादशाह रोड से शैलेंद्र चौहान निवासी नाहरगढ़ को 121 ग्राम एमडी ड्रग्स तथा खजराना क्षेत्र से अकरम उर्फ अक़ी पिता रशीद खान निवासी बड़ला को 10 ग्राम बाउन शुगर के साथ पकड़ा। आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

डॉक्टर सहित तीन ने की आत्महत्या

इंदौर। शहर में गुरुवार को आत्महत्या के तीन मामले सामने आए। आत्महत्या करने वालों में महिला डॉक्टर भी शामिल है। डॉक्टर को उसका पति प्रताड़ित करता था। खुडैल थाना क्षेत्र में कन्नौद की रहने वाली डॉ. दामिनी पति संदीप ने जहर खा लिया था। वह कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर के पद पर कार्यरत थीं। दामिनी का पति के साथ किसी अन्य महिला से संबंधों को लेकर अक्सर विवाद होता था। इससे दामिनी मानसिक तनाव में थीं। रंगवासा में महिला की 15 दिन तक इलाज के बाद मौत हो गई, उसने पति से विवाद के बाद फांसी लगाई थी। मृतका का नाम ममता बाई (30) पति सोहनलाल पटेल है। राऊ पुलिस के अनुसार, ममता का पायल दिलाने को लेकर विवाद हुआ था। जब पति ने पायल नहीं दिलाई तो उक्त कदम उठा लिया। भंवरकुआं थाना क्षेत्र के अभिनव नगर में रहने वाली छात्रा ने सदिग्ध परिस्थितियों में फांसी लगा ली। मृतिका की पहचान कशिश पंवार के रूप में हुई है। वह मंडला जिले की रहने वाली थी। यहां अपने भाई के साथ किराए के कमरे में रहकर पढ़ाई कर रही थी। उसके पिता कल्याण सिंह पंवार पुलिस विभाग में हैं।

कार बेचने का झांसा, 13.45 लाख ठगे

इंदौर। कार दिलाने के नाम पर युवक से 13.45 लाख रुपए ठग लिए। संयोगितागंज पुलिस के अनुसार, नवलखा स्थित ऑटो डील ऑफिस के जरिए दो आरोपियों ने कार सौदा कर पैसे चूसल लिए। बाद में न कार दी और न पैसे लौटाए। पीड़ित करण सलूजा ने बताया कि उसने विकास टावर में संचालित अमन ऑटोडील से कार का सौदा किया था। इस दौरान आरोपी अमान खान और आरिस अंसारी ने उसे भरोसे में लेकर राशि ले ली। इसके बाद कार देने में टालमटोल शुरू कर दी। तब उसे धोखाधड़ी का एहसास हुआ। पुलिस जांच सामने आया कि आरोपियों ने धोखे से रकम लेकर उसका निजी उपयोग कर लिया।

चंदन नगर थाना कानून व्यवस्था में अवल

इंदौर। पुलिस ने जनता के प्रति जवाबदेही बढ़ाने थानों की कार्यप्रणाली का मासिक मूल्यांकन शुरू किया है। मार्च माह के परिणाम जारी कर दिए गए हैं, जिसमें थाना चंदन नगर ने सबसे बेहतर प्रदर्शन कर पहला स्थान हासिल किया है, जबकि थाना सराफा सबसे आखिरी स्थान पर रहा। पुलिस कमिश्नर के मार्गदर्शन में शुरू की गई इस प्रणाली का उद्देश्य पुलिसिंग को अधिक प्रभावी, पारदर्शी और जनहितैषी बनाना है। इसके तहत शहर के 32 थानों का मूल्यांकन अलग-अलग मानकों पर किया गया, जिसमें अपराध नियंत्रण, जनता की संतुष्टि और नवाचार जैसे पहलुओं को शामिल किया गया। मार्च के मूल्यांकन में चंदन नगर ने पहला, भंवरकुआं ने दूसरा और द्वारिकापुरी ने तीसरा स्थान, जबकि सराफा प्रदर्शन के मामले में सबसे पीछे रहा। पुलिस विभाग ने स्पष्ट किया है कि बेहतर प्रदर्शन करने वाले थानों के स्टफ को प्रोत्साहित किया जाएगा, जबकि कमजोर प्रदर्शन करने वालों को प्रशिक्षण देकर उनकी कार्यक्षमता में सुधार किया जाएगा।

इंदौर

पत्नी ने प्रेमी के साथ मिलकर पति को मरवाया, सिर में पास से गोली मारी

पत्नी सहित 4 गिरफ्तार, प्रेमी फरार, पहले लगा सड़क हादसा



हुआ कि मृतक की पत्नी भारती पाटीदार और उसका प्रेमी राहुल उर्डके हत्याकांड के मुख्य सूत्रधार थे। दोनों के बीच प्रेम संबंध थे। उन्होंने मिलकर नवीन को रास्ते से हटाने की योजना बनाई। राहुल उर्डके पहले भी एक हत्या के मामले में शामिल रहा था। जमानत पर बाहर आया था।

पुलिस को लगा सड़क हादसा - यह घटना 12 अप्रैल की रात की है जब राऊ थाना पुलिस को सूचना मिली कि नखराली हागी के पास एक युवक घायल हालत में पड़ा है। मौके पर पहुंची पुलिस ने युवक को अस्पताल पहुंचाया जहां उसकी पहचान रंगवासा निवासी 31 वर्षीय नवीन पाटीदार के रूप में हुई। शुरुआत में

मामला सामान्य दुर्घटना माना गया और उसी आधार पर मर्ग कायम कर जांच शुरू की गई।

पोस्टमार्टम रिपोर्ट में खुलासा- जब डॉक्टरों ने शव का परीक्षण किया तो चौंकाने वाला खुलासा हुआ। नवीन की गर्दन के पीछे गोली फंसी हुई मिली। इसके बाद पुलिस ने घटनास्थल का दोबारा बारीकी से निरीक्षण किया जहां से खाली कारतूस भी बरामद हुआ। साथ ही आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली गई जिससे यह स्पष्ट हो गया कि यह एक सुनियोजित हत्या है।

सीसीटीवी फुटेज खंगाले- जांच टीम ने करीब 100 से ज्यादा सीसीटीवी फुटेज खंगाला और तकनीकी

गर्मी के कारण नर्सरी से आठवीं तक के सभी स्कूलों का समय बदला गया

बच्चों की सेहत को देखते हुए प्रशासन ने तत्काल यह फैसला लिया



लू से हलकान 16 जिले

मौसम विभाग ने भी प्रदेश में गर्मी को लेकर चेतावनी जारी की है। भोपाल स्थित मौसम केंद्र के अनुसार मध्यप्रदेश के 16 जिलों में लू चलने की संभावना जताई गई है। इनमें रतलाम, झाबुआ, धार, अलीराजपुर, बड़वानी, खरगोन, बुरहानपुर, खंडवा, हरदा, नर्मदापुरम, बैतूल, छिंदवाड़ा, पांडुरंगा, सिवनी, मंडला और बालाघाट शामिल हैं।

गया, जो इस सीजन का अब तक का सबसे अधिक तापमान माना जा रहा है। तेज धूप और गर्म हवाओं के कारण दोपहर के समय बाहर निकलना मुश्किल हो रहा है। अप्रैल के शुरुआती दिनों में जहां आंधी, बारिश और ओलावृष्टि के कारण मौसम में ठंडक बनी हुई थी, वहीं अब अचानक मौसम ने करवट ले ली है। तापमान में तेजी से वृद्धि ने लोगों को गर्मी के तीखे तेवर का अहसास करा दिया है।

चार दिन तक ऐसी गर्मी - मौसम वैज्ञानिकों

का कहना है कि अप्रैल के दूसरे पखवाड़े में आमतौर पर तापमान में तेजी आती है और इस बार भी यही स्थिति देखने को मिल रही है। आने वाले चार दिनों में प्रदेश के कई हिस्सों में गर्म हवाएं चलने की संभावना है, जिससे तापमान और बढ़ सकता है। ऐसे हालात में प्रशासन ने लोगों से दोपहर के समय अनावश्यक रूप से बाहर न निकलने, पर्याप्त पानी पीने और बच्चों का विशेष ध्यान रखने की अपील की है।

ज्यादा सैलरी का लालच देकर 1.40 लाख ठगे, वर्क फ्रॉम होम का झांसा

नौकरी शुरू करने से पहले प्रोसेसिंग फीस के नाम पैसे मांगे

इंदौर। शहर में वर्क फ्रॉम होम जॉब के नाम पर ठगी का एक और मामला सामने आया है, जिसमें युवक ने 1.40 लाख रुपए की धोखाधड़ी की गई। आरोपियों ने 1.40 डेटा हैंडलिंग का काम दिलाने और हर महीने 30 से 40 हजार रुपए कमाने का झांसा देकर युवक को अपने जाल में फंसा लिया। मामले में भंवरकुआं पुलिस ने अज्ञात आरोपी पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार, भंवरकुआं थाना क्षेत्र निवासी असीन शेख के मोबाइल पर शैलेन्द्र नामक युवक का मैसेज आया था। उसने आरोपी पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार, भंवरकुआं थाना क्षेत्र निवासी असीन शेख के मोबाइल पर शैलेन्द्र नामक युवक का मैसेज आया था। उसने आरोपी पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार, भंवरकुआं थाना क्षेत्र निवासी असीन शेख के मोबाइल पर शैलेन्द्र नामक युवक का मैसेज आया था। उसने आरोपी पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

नौकरी शुरू करने से पहले प्रोसेसिंग फीस के रूप में 2.50 लाख रुपए जमा करने होंगे। जब युवक ने इतनी बड़ी रकम देने में असमर्थता जताई तो आरोपी ने उसे 1.40 लाख रुपए जमा करने को कहा और बाकी राशि खुद देने का भरोसा दिलाया। आरोपी की बातों में आकर युवक ने जनवरी 2025 में फोने के जरिए रुपए ट्रांसफर कर दिए।

लगातार टालमटोल- पैसे मिलने के बाद आरोपी लगातार काम शुरू कराने के नाम पर टालमटोल करता रहा। कभी काम न आने का बहाना बनाया तो कभी प्रक्रिया पूरी होने की बात कहकर समय निकालता रहा। जब युवक ने अपने पैसे वापस मागे तो आरोपी ने बहाने बनाने शुरू कर दिए और अंततः मोबाइल बंद कर लिया। पुलिस मोबाइल नंबर और ट्रांजेक्शन डिटेल् के आधार पर आरोपी की तलाश में जुटी हुई है।

कुछ दिन बाद हुआ चयन- कुछ दिन बाद आरोपी ने युवक को मैसेज कर बताया कि उसका चयन हो गया है, लेकिन

खंडहर में मिला वृद्ध का शव

इंदौर। खंडहर में मिले वृद्ध की

मौत बीमारी से होना माना जा रहा है। बुधवार को उसका क्षत विक्षत अवस्था में पड़ा मिला था। मृतक छान निवासी नंदननगर शराब पीने का आदी होकर भिक्षावृत्ति करता था। चंदननगर पुलिस के अनुसार, खंडहर के पास बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे। तभी गेंद खंडहर में चली गई थी। जब बच्चे गेंद लेने गए तो उन्हें वृद्ध को मृत अवस्था में देखा और आसपास के रहवासियों को जानकारी दी। शव के आसपास चूहे घूम रहे थे। चूहों ने आंखों, चेहरा सहित शरीर के कई हिस्सों को कुतर दिया था। मृतक के भानजे गजजू ने बताया कि छान के तीन बेटे हैं, जो द्वारकापुरी में रहते हैं। उनकी शादी हो चुकी है। तीनों मजदूरी करते हैं। छान की पत्नी की छह माह पहले मौत हो चुकी है। वह बच्चों से अलग रहता था।

बाल विवाह पर पुलिस-प्रशासन सख्त चौपाल से मोहल्लों तक जागरूकता

अक्षय तृतीया से पहले अलर्ट, 24 घंटे कंट्रोल रूम और उड़नदस्ता

इंदौर। बाल विवाह जैसी कुप्रथा पर रोक लगाने के लिए पुलिस और प्रशासन ने जमीनी स्तर पर बड़ा अभियान छेड़ दिया है। अब जागरूकता सिर्फ स्कूलों तक सीमित नहीं रही, बल्कि मोहल्लों और चौपालों में पहुंचकर लोगों को कानून और इसके दुष्परिणाम समझाए जा रहे हैं। पुलिस कमिश्नर संतोष सिंह के निर्देश और कलेक्टर शिवम वर्मा के मार्गदर्शन में महिला एवं बाल विकास विभाग ने शहरभर में विशेष अभियान शुरू किया है। एडिशनल डीसीपी महिला अपराध संस्था राय के नेतृत्व में परदेशीपुरा और खजराना क्षेत्र में चौपाल और मोहल्ला बैठकों का आयोजन कर लोगों को जागरूक किया गया।

कम उम्र की शादी पर सख्ती- कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने बाल विवाह प्रतिबंध अधिनियम की जानकारी देते हुए कम उम्र में शादी के दुष्परिणाम और कानूनी सजा के बारे



में विस्तार से बताया। साथ ही पीडितों और मौलवियों से अपील की गई कि वे विवाह या निकाह से पहले उम्र का सत्यापन जरूर करें। अक्षय तृतीया पर होने वाले सामूहिक विवाहों को देखते हुए प्रशासन ने सख्त निगरानी शुरू कर दी है। जिले में 24 घंटे कंट्रोल रूम सक्रिय रहेगा और चार्ल्ड हेल्थप्लाइन 1098 पर भी सिकायत दर्ज कराई जा सकेगी। विभिन्न स्तरों पर गठित टीमों हर आयोजन पर नजर रखेंगी, ताकि एक भी बाल विवाह न हो सके।

बाबा साहब अंबेडकर का स्टेटस लगाया, पत्नी को घर से निकाला

डेढ़ माह के बच्चे के साथ निकाला, थाने पहुंची पीड़िता

इंदौर। एरोड्म थाना क्षेत्र के भोलनाथ कॉलोनी में चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जहां सोशल मीडिया पर बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर का स्टेटस लगाने को लेकर पति-पत्नी के बीच विवाद इतना बढ़ गया कि महिला को डेढ़ माह के नवजात बच्चे के साथ घर से निकाल दिया गया। पीड़िता रीना पंवार गुरुवार शाम थाने पहुंचीं। परिवार के अनुसार, रीना की शादी डेढ़ साल पहले रिंश पंवार से हुई थी और दोनों का विवाह अंतरराज्यीय था। रीना बिहार की रहने वाली है। शुरुआती दौर में परिवार को उसके धार्मिक विचारों को लेकर कोई आपत्ति नहीं थी।

ननदों ने जताई थी आपत्ति बताया जा रहा है कि 14 अप्रैल को अंबेडकर जयंती पर रीना ने अपने सोशल मीडिया स्टेटस पर बाबा साहब का चित्र लगाया था, जिस पर परिवार की दो ननदों ने आपत्ति जताई और उसे हटाने का दबाव बनाया। मामला बढ़ने पर विवाद गहरा गया। आरोप है, इसी विवाद के बाद पति रिंश पंवार ने रीना के साथ अर्धद्व्यहवार किया और तलाक देने की धमकी दी। इसके बाद उसे डेढ़ माह के बच्चे के साथ घर से निकाल दिया गया। पुलिस ने प्रारंभिक सुनवाई के बाद उन्हे कानूनी प्रक्रिया के तहत कोर्ट में मामला दर्ज कराने की सलाह दी। वहीं थाना प्रभारी तरुण बघेल ने मामले में जांच और उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

संपादकीय

भारत: जीडीपी की गिरती रैकिंग

पश्चिम एशिया में जारी युद्ध के बीच अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) द्वारा भारत की जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) की घटती रैकिंग अस्थायी भले हो, लेकिन देश की आर्थिक के लिए चिंताकरी जरूर है। इसका मोदी सरकार को कुछ राजनीतिक नुकसान जरूर हो सकता है, क्योंकि सरकार ने भारत दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है, इसको लेकर बहुत डोल बजाए थे। लेकिन डॉलर के मुकाबले रूपए के घटते मूल्य ने हमें सीधे चौथे से छठे स्थान पर पहुंचा दिया है। संतोष की बात इतनी है कि ने भारत की आर्थिक विकास की रफ्तार को कम नहीं आंका है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के अप्रैल 2026 के 'वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक' के आंकड़ों के अनुसार, भारत जीडीपी रैकिंग में 4थे स्थान से फिसलकर छठे पायदान पर आ गया है।

इस गिरावट के प्रमुख कारण और तथ्य इस प्रकार हैं:

आईएमएफ के आंकड़ों के मुताबिक 2025 में भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार 3.92 ट्रिलियन (अनुमानित) रहा, जिससे ब्रिटेन (4 ट्रिलियन डॉलर) और जापान (4.44 ट्रिलियन डॉलर) उसके आगे निकल गए हैं। विशेषज्ञों के अनुसार जीडीपी में यह गिरावट मुख्यतः सांख्यिकीय है, न कि आर्थिक सुस्ती। इसके पीछे मुख्य रूप से अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रूपए की कमजोरी, डॉलर की मजबूती और आधार वर्ष में संशोधन प्रमुख कारण हैं। भारत के लिए संतोष का विषय यह है कि जीडीपी रैकिंग गिरने के बावजूद, भारत 6.5% से 7.6% की विकास दर के साथ दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में बना हुआ है। ऐसे में भविष्य का अनुमान है कि भारत 2027 तक 4था स्थान और 2031 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का स्थान फिर से हासिल कर सकता है। संक्षेप में कहें तो रुपया कमजोर होने से डॉलर के टर्म में हमारी इकोनॉमी का साइज छोटा दिखा है, लेकिन वास्तविक विकास अभी भी मजबूत है। हालांकि कुछ लोग इसे डेटा में हेराफेरी भी मान रहे हैं। बिजनेस स्टैंडर्ड की रिपोर्ट के अनुसार, आईएमएफ के अनुमानों के मुताबिक, भारत की जीडीपी 2025 में लगभग 3.92 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच जाएगी, जो 2024 में 3.5 ट्रिलियन डॉलर थी। यह मजबूत घरेलू मांग और निरंतर आर्थिक गति के समर्थन से मजबूत नाममात्र वृद्धि को दर्शाता है। गौरतलब है कि आईएमएफ अर्थव्यवस्थाओं को अमेरिकी डॉलर के संदर्भ में रैंक करता है, जिसका अर्थ है कि स्थानीय मुद्रा जीडीपी को उम्मीद है। इस बदलाव का एक अन्य महत्वपूर्ण कारक भारत का चाहिए। इससे वैश्विक रैकिंग निर्धारित करने में मुद्रा की गति एक महत्वपूर्ण कारक बन जाती है। पिछले एक वर्ष में, भारतीय रुपया 2024 में लगभग 84.6 रुपये प्रति अमेरिकी डॉलर से गिरकर 2025 में लगभग 88.5 रुपये प्रति डॉलर हो गया है, और इसमें और अधिक कमजोरी आने की उम्मीद है। इस बदलाव का एक अन्य महत्वपूर्ण कारक भारत के जीडीपी के आधार वर्ष और कार्यप्रणाली में संशोधन है। इस वर्ष की शुरुआत में संदर्भ में आधार वर्ष को 2011-12 से बदलकर 2022-23 कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक उत्पादन अनुमानों का पुनर्मूल्यांकन करना पड़ा। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, वित्त वर्ष 2026 के लिए नाममात्र जीडीपी को पुनर्नी श्रृंखला के तहत 35.7 ट्रिलियन रुपये से घटाकर नई श्रृंखला में 34.5 ट्रिलियन रुपये कर दिया गया है। यह अंतर महत्वपूर्ण है, क्योंकि डॉलर मूल्यों पर आधारित वैश्विक रैकिंग अक्सर किसी अर्थव्यवस्था की अंतर्निहित ताकत को छिपा सकती है। हालांकि आगामी वर्षों में रैकिंग में भारत की स्थिति सुधर सकती है। देश के 2026 में छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बने रहने की उम्मीद है, जिसका संकेत घरेलू उत्पाद लगभग 4.15 ट्रिलियन डॉलर होने का अनुमान है, जो अभी भी ब्रिटेन के अनुमानित 4.26 ट्रिलियन डॉलर से थोड़ा कम है।

भूदान आंदोलन के 75 वर्ष : भूमि, न्याय और नैतिकता की पुकार



देश के सामाजिक और नैतिक इतिहास में ऐसे कुछ आंदोलन हुए हैं, जिन्होंने बिना हिंसा, बिना सत्ता और बिना संसाधनों के भी समाज की आत्मा को झकझोर दिया है। आचार्य विनोबा भावे का भूदान आंदोलन ऐसा ही एक अद्वितीय प्रयोग था, जिसने न केवल भूमि के पुनर्वितरण का प्रश्न उठाया, बल्कि समाज के नैतिक पुनर्निर्माण की दिशा भी दिखाई। 18 अप्रैल को मनाया जाने वाला 'भूदान दिवस' उस ऐतिहासिक क्षण की याद दिलाता है, जब 1951 में तेलंगाना के पोचमपल्ली गाँव से इस आंदोलन की शुरुआत हुई थी। अब, जब इस आंदोलन के लगभग 75 वर्ष पूर्ण होने को हैं, इसके महत्व और वर्तमान संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता पर पुनर्विचार आवश्यक हो जाता है।

भूदान आंदोलन की शुरुआत एक साधारण, लेकिन गहरे सामाजिक प्रश्न से हुई थी - क्या समाज अपने ही भूमिहीन लोगों के लिए स्वेच्छ संसाधन साझा कर सकता है? पोचमपल्ली में जब भूमिहीन परिवारों ने विनोबा भावे से भूमि मांग की, तब एक जमींदार द्वारा स्वेच्छ से भूमि-दान की घोषणा ने इस आंदोलन को जन्म दिया। विनोबा भावे ने इसे केवल भूमि-दान तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे 'सर्वोदय' याने सभी के उत्थान के व्यापक दर्शन से जोड़ा।

भूदान आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए विनोबा भावे ने व्यापक पदयात्राएँ कीं, जो इस आंदोलन की आत्मा बन गईं। उन्होंने लगभग 13 वर्षों (1951 से 1964 के बीच) लगातार देशभर में पदयात्रा की और करीब 58,000 से अधिक किलोमीटर पैदल चलकर देश के लगभग 16 से अधिक राज्यों का भ्रमण किया और हजारों गाँवों में पहुंचकर सीधे लोगों से संवाद किया। इन पदयात्राओं के माध्यम से उन्होंने न केवल भूमि-दान का आह्वान किया, बल्कि समाज में समानता, सहयोग और अहिंसक परिवर्तन की भावना को भी गहराई से स्थापित किया। आगे चलकर यह आंदोलन 'ग्रामदान'

इक्कीसवीं सदी के किसी भी राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय, स्थानीय, यहां तक कि मोहल्ले-पड़ोस के आपसी द्वंदों को देखें तो उनकी बुनियाद में भूमि के वितरण, विभाजन दिखाई देते हैं। ऐसे में साढ़े सात दशक पहले विनोबा भावे की अगुआई में हुए भूदान, ग्रामदान की अहमियत को समझना प्रासंगिक नहीं होगा? प्रस्तुत है, 'भूदान दिवस' पर इसी की पड़ताल करता यह विशेष लेख।

की अवधारणा तक विस्तारित हुआ, जिसमें पूरे गाँव की भूमि को सामूहिक स्वामित्व और उपयोग के लिए समर्पित करने का विचार सामने आया।

विनोबा मानते थे कि भूमि प्रकृति की देन है और उस पर किसी एक व्यक्ति का पूर्ण स्वामित्व नैतिक रूप से उचित नहीं हो सकता। इसी कारण उन्होंने समाज के संपन्न वर्ग से अपील की कि वे अपनी भूमि का एक हिस्सा भूमिहीनों को दें, ताकि समाज में

का स्वामित्व मिला। हालांकि, कई स्थानों पर इन 'बोर्डों' को प्रशासनिक जटिलताओं, सीमित संसाधनों और राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। कई राज्यों में 'भूदान बोर्डों' के पास भूमि का रिकॉर्ड तो था, लेकिन उसका वास्तविक वितरण नहीं हो सका। कुछ स्थानों पर तो भूमि पर कब्जा दिलाने में भी कठिनाइयाँ आईं। इसके बावजूद, यह संस्थागत प्रयास इस बात का प्रमाण है

आर्थिक लाभ पर आधारित नहीं होना चाहिए, बल्कि उसमें सामाजिक न्याय और नैतिकता का भी समावेश होना चाहिए। आज जरूरत इस बात की है कि भूदान की भावना को समकालीन संदर्भ में पुनर्निर्भाषित किया जाए। यह जरूरी नहीं कि लोग अपनी भूमि दान करें, लेकिन यह आवश्यक है कि समाज और सरकार मिलकर ऐसी नीतियाँ बनाएँ, जो भूमि के न्यायपूर्ण वितरण को सुनिश्चित करें। भूमि सुधार, वन अधिकार कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन और विस्थापित समुदायों के पुनर्वास जैसे मुद्दे इसी दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं।

इसके अलावा, भूदान आंदोलन हमें सामुदायिक भावना और साझेदारी की संस्कृति को पुनर्जीवित करने की प्रेरणा भी देता है। आज जब समाज तेजी से व्यक्तिवादी होता जा रहा है, तब 'साझा संसाधन' और 'साझी जिम्मेदारी' की अवधारणा और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। ग्राम स्तर पर सामूहिक निर्णय, संसाधनों का साझा उपयोग और स्थानीय स्वशासन की मजबूत व्यवस्था आदि सभी पहलू भूदान के मूल विचार से जुड़े हुए हैं। शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से भी भूदान की भावना को आगे बढ़ाया जा सकता है। नई पीढ़ी को यह समझाना जरूरी है कि सामाजिक परिवर्तन केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि हरेक नागरिक की भूमिका इसमें महत्वपूर्ण है। यदि समाज के सक्षम वर्ग स्वेच्छ से कमजोर वर्गों के लिए आगे आएँ, तो असमानता को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

'भूदान आंदोलन' के 75 वर्षों की यात्रा केवल अतीत को स्मरण करने का अवसर नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा तय करने का भी समय है। यदि हम विनोबा भावे के विचारों को आज के संदर्भ में समझकर उन्हें व्यवहार में लाने का प्रयास करें, तो यह आंदोलन एक बार फिर समाज में नई ऊर्जा और दिशा प्रदान कर सकता है। 'भूदान दिवस' पर यह संकल्प लेना सार्थक होगा कि हम अपने-अपने स्तर पर समानता, न्याय और साझेदारी की भावना को मजबूत करें। यही इस ऐतिहासिक आंदोलन और उसके प्रणेता विनोबा भावे के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। (संप्रेस)



संतुलन और समानता स्थापित हो सके। विनोबा के विचार में यह केवल आर्थिक सुधार का उपाय नहीं, बल्कि 'हृदय परिवर्तन' की प्रक्रिया थी, जिसमें दान देने वाला और प्राप्त करने वाला, दोनों एक नए सामाजिक संबंध में जुड़ते हैं। उनका यह भी विश्वास था कि यदि परिवर्तन स्वेच्छ और अहिंसा के आधार पर होगा, तो वह अधिक स्थायी और मानवीय होगा।

भूदान आंदोलन के दौरान प्राप्त जमीनों के वितरण के लिए विभिन्न राज्यों में 'भूदान-यज्ञ बोर्डों' की स्थापना की गई जो दान में प्राप्त भूमि का अभिलेखीकरण, सत्यापन और वितरण सुनिश्चित करते थे। बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और उड़ीसा जैसे राज्यों में लंबे समय तक 'भूदान-यज्ञ बोर्ड' सक्रिय रहे। इनकी जिम्मेदारी थी कि वे दान की गई भूमि का कानूनी हस्तांतरण कर उसे भूमिहीन परिवारों तक पहुंचाएँ। कुछ राज्यों में इन 'बोर्डों' ने उल्लेखनीय कार्य किए, जहां हजारों परिवारों को भूमि

कि भूदान आंदोलन केवल नैतिक अपील तक सीमित नहीं था, बल्कि उसे प्रशासनिक ढांचे में ढालने की भी कोशिश की गई।

वर्तमान समय में भूमि असमानता का प्रश्न नए रूप में सामने आ रहा है। एक ओर बड़े कॉर्पोरेट और उद्योग समूह विशाल भूमि पर अधिकार रखते हैं, वहीं दूसरी ओर लाखों किसान और आदिवासी समुदाय भूमि से वंचित या विस्थापन के खतरे में हैं। शहरीकरण और औद्योगीकरण के बढ़ते दबाव ने भूमि को केवल एक संसाधन नहीं, बल्कि एक 'वस्तु' में बदल दिया है, जिसका मूल्य बाजार तय करता है, जिससे सामाजिक असमानता और गहरी होती जा रही है।

ऐसे में भूदान आंदोलन याद दिलाता है कि भूमि केवल आर्थिक संपत्ति नहीं है, बल्कि यह जीवन, संस्कृति और अस्तित्व का आधार है। विनोबा भावे का दृष्टिकोण सिखाता है कि विकास का मॉडल केवल

राजनीति

प्रो.संजय द्विवेदी

लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विधि, भोपाल में जनसंचार विभाग के अध्यक्ष हैं।



डिया की ताकत आज सर्वव्यापी है और कई मायनों में सर्वांगी है। ऐसे में विकास के सवालों और उसके लोकव्यापिकरण में मीडिया की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो उठी है। यह एक ऐसा समय है, जबकि विकास और सुशासन के सवालों पर हमारी राजनीति में बात होने लगी है, तब मीडिया में यह चर्चाएं न हों यह संभव नहीं है। समाज विकास की प्रक्रिया और उसकी आकांक्षाएं मीडिया में दर्ज हों, ऐसी उम्मीद की जाती है। इन विषयों की रिपोर्टिंग के लिए तमाम पत्रकार आगे आ रहे हैं। वैश्विक स्तर पर भी विकास की प्रक्रारिता को एक नई नजर से देखा जा रहा है। भारत में विकास की प्रक्रारिता और उसके सवालों से जुड़ने के लिए पत्रकारों की एक पूरी पीढ़ी तैयार है, किंतु मुख्यधारा के मीडिया के द्वारा इन विषयों को तरजीह न दिए जाने के कारण निराशा ही हाथ लगती है। संकट पत्रकारों की ओर से नहीं, मीडिया संस्थानों और प्रबंधकों की ओर से नहीं। विकास का मुद्दा क्या सिर्फ सरकारी विज्ञापनों का विषय है, सरकारी मीडिया का विषय है, या यह समाज में हो रहे नवाचारों का भी विषय है। विकास पत्रकारिता को पाठ्यक्रम के साथ मीडिया कर्म का भी हिस्सा होना चाहिए।

भारत जैसे विविधता और बहुलता भरे समाज में सभी उम्मीदों, सपनों और बदलावों को रेखांकित कर पाना कठिन है। क्योंकि विकास के अनेक ताल हैं और देश में समाज की रचना भी बहुस्तरीय है, देश में कहावत प्रचलित है 'चार कोस पर पानी बदले आठ कोस पर वाणी', इसलिए किसी राज्य को भी एक ही पैमाने से नहीं नापा जा सकता। जैसे मध्य प्रदेश में एक तरफ

समृद्ध मालवा है, तो दूसरी ओर झाबुआ जैसे इलाके भी हैं। एक तरफ इंदौर की चमक है, तो दूसरी ओर अलीराजपुर जैसे क्षेत्र भी हैं। छत्तीसगढ़ में अबुझमाड़ है, तो भिलाई भी है। ऐसे में पत्रकारों या विकास के सवालों पर लिखने वालों की चुनौतियां बढ़ जाती हैं। इसी तरह विकास की भूमिका भी यहां विस्तृत और परिवर्तित हो जाती है। हम देखें तो 1950 के पहले आर्थिक विकास हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण था। किंतु 1950 के बाद की चिंताएं अलग हो गयीं। बाद के दिनों में सामाजिक विकास को एक बड़ा कारक माना जाने लगा है। सामाजिक न्याय से लेकर स्थाई विकास के सवाल अब बड़े हो गए हैं। यहां तक कि पर्यावरण और ग्लोबल वार्मिंग जैसी चीजें भी हमारे सामने हैं।

एक समय में विकसित और विकासशील देशों की बहसों भी हमने सुनीं जिनमें मैकब्राइड कमिशन की रिपोर्ट एक अलग तरह से बात करती हुयी नजर आती है, जिनमें कुछ सवाल आज भी मौजूद हैं। नियंत्रित मीडिया से मीडिया के चौतरफा विकास का समय भी आया जिसमें कुछ भी छिपाना और दबाना असंभव सा हो गया। कई बार यह भी लगता रहा कि विकास के सवाल सिर्फ सरकारी माध्यमों (मीडिया) के लिए ही महत्व का है, बाकी माध्यमों का अपना एजेंडा और राय अलग है। यहां यह भी देखना जरूरी है कि कम्युनिकेशन (संचार) सिर्फ सूचनाओं का हस्तांतरण नहीं है। बल्कि पक्षधरता के साथ, न्याय के लिए खड़ा होना भी है। जन को ताकतवर बनाना भी है। अवसर की समानता की अवधारणा को प्रचारित और स्थापित करना

भी है।

विकेन्द्रीकरण ने विकास के सामने कई नए प्रश्न खड़े किए हैं। जिनके भी टोस और वाजिब हल हमें ढूंढने चाहिए। जैसे पंचायती राज में भारत ने एक लंबी छलांग लगाई है। सत्ता इसके चलते पंचायतों तक पहुंची, पर सवाल यह है कि क्या इससे लोकतंत्र मजबूत हुआ है? क्या संसदीय राजनीति और चुनावों की तमाम बुराईयां हमारी पंचायतों तक नहीं पहुंच गयीं? वहीं हम मीडिया को देखें तो उसका भी विस्तार हुआ है। व्यापकता बढ़ी है, पहुंच भी बढ़ी है। पर सवाल यह है कि क्या मीडिया में संवेदनशीलता, ग्रहणशीलता और विविधता को आदर देने की उसकी भावना भी बढ़ी है, तो शायद उत्तर नकारात्मक ही हो। तीनों तंत्रों (कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका) से निराश लोग मीडिया की ओर बहुत उम्मीदों से देखते हैं। कई अर्थों में सत्ता का तो विकेन्द्रीकरण दिखता है, किंतु मीडिया धीरे-धीरे केन्द्रीकरण का शिकार हो रहा है। इसलिए जरूरी है क्रास मीडिया ऑनरशिप के बारे में भी भारत जैसे देश सोचें। ताकि मीडिया के एकाधिकार के खतरों से बचा जा सके। इसके साथ ही प्रेस कौंसिल जैसी नख-दंत हीन संस्था के अधिकारों और क्षेत्राधिकार में बदलाव करते हुए उसे मीडिया कौंसिल में बदला जाना जरूरी है ताकि वह आज के प्रभावी मीडिया को भी अपनी चर्चा में ले सके।

हम जिस संकट से दो चार हैं, वह यह है कि सूचनाएं बढ़ गई हैं और खबरें घट गई हैं। अखबारों के पन्ने बढ़ गए हैं, किंतु इनसे आम-आदमी गायब है। चैनल अब चौबौस घंटे कुछ बोलते हैं, पर उनमें विकास और जनता के

सवालों की जगह बहुत कम है। जबकि विकास की पत्रकारिता की मुक्ति इसमें है कि जो लोग मीडिया तक नहीं पहुंच सकते, मीडिया उन तक पहुंचे। उनका दूद सुने। अच्छी और उम्मीद जगाने वाली खबरों की ओर जाएं।

हमारी राजनीति बदल रही है, हमारा समाज बदल रहा है किंतु हमारे मीडिया के सोचने और अभिव्यक्त करने की शैली उस तुलना में नहीं बदली जैसी बदलनी चाहिए। आज यह मान्यता बन चुकी है कि विकास भारतीय मीडिया की प्राथमिकता नहीं है, शायद समाज भी उसकी प्राथमिकता नहीं है। हमारे नागरबोध ने मीडिया को समाज से बड़ा बना दिया है। किंतु यह तय मानिए कि कोई भी मीडिया, कोई भी राजनीति और कोई भी व्यक्ति समाज से बड़ा नहीं हो सकता। 18 से 25 साल और 18 से 35 साल के युवाओं के बीच बाजार खोज रहे मीडिया की चिंताएं अलग हो सकती हैं किंतु समाज की चिंताएं कुछ भिन्न हैं। वे ही वास्तविक चिंताएं हैं। मीडिया अगर इन चिंताओं से अलग व्यवहार कर रहा है तो वह अपने अस्तित्व पर संकट स्वयं रच रहे। विश्वसनीयता और प्रामाणिकता के संकट तो उसके साथ संयुक्त हैं ही। मीडिया के नेतृत्वकर्ताओं के लिए यह सोचने का सही समय है कि जब सारा देश विकास और सुशासन के सवालों पर गंभीर हो रहा है, उसमें अपने शासकों से जवाब मांगने की हिम्मत आ रही है, तो हमारा मुख्यधारा का मीडिया क्या कर रहा है? ऐसे तमाम सवाल मीडिया के नेतृत्वकर्ताओं के सामने आज उपस्थित हैं, अगर इन सवालों के हल हमने आज नहीं तलाशे तो इन बहुत देर हो जाएगी।

मोहल्ले में भी हो गया राजीनामा

कटाक्ष

डॉ. महेन्द्र अग्रवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।



मोहल्ले में पिछले दो महीने से लड़ाई चल रही थी रामजीलाल और भैरवनाथ दोनों एक दूसरे से कुत्ते बिल्ली की तरह लड़ रहे थे पर दोनों में से कोई भी हार मानने को तैयार नहीं था। यूपू पसत होने के भाव उनके चेहरे से साफ-साफ दिखाई दे रहे थे मगर दोनों में से किसी ने भी अपनी नजरें या चेहरा अभी तक नीचे नहीं किया था। वाक युद्ध में भी दोनों एक दूसरे पर भारी पड़ रहे थे। भाव और संकेत से भी दोनों की आक्रामकता में कोई कमी नहीं आई थी राम

दोनों थक गए थे पर चूँकि नाक का सवाल था तो पहले कौन अपनी नाक पर मक्खी बैठने दे? दूसरे की नाक पर मक्खी बैठ जाए तो वह भी ढीला पड़ जाए। आखिर जो पद के पीछे से खेल कर रहे थे वही काम आए। रात के अंधेरे में उन्होंने ही नकाब ओढ़ कर मध्यस्थ की भूमिका निभाई और दोनों के बीच संदेशों का आदान-प्रदान कर घोषणा कर दी कि इस पखवाड़े दोनों बिस्कुल नहीं लड़ेंगे। इसी बीच दोनों हर्दयालव के घर में बैठकर आगे की राजीनामा की शर्तें तय कर लेंगे ताकि पूर्ण शांति हो सके। मोहल्ले में सभी ने इस युद्ध विराम की घोषणा पर दोनों को बधाई देते हुए यही कहा कि मोहल्ले की शांति बहाली की दिशा में यह राहत भरी खबर है, इससे मोहल्ले के बाकी लोग भी चैन से सो सकेंगे।

अपने पड़ोसी विशंभर का रणनीतिक सहयोग मिल रहा था तो भैरवनाथ को किशाना और गोपाल का। यह भी एक दूसरे के घोर विरोधी थे और मोहल्ले की पिछली लड़ाईयों में अपने-अपने विधियों से दो-दो हाथ कर चुके थे। तब इन्होंने अपनी लड़ाई में इसी तरह का गुपचुप सहयोग मिलता रहा था। कभी कोई किसी की वित्तीय मदद करता तो कभी कोई किसी को आगे बढ़कर पुनर्जी इंद्रिक पिता देता। कभी कोई प्रशासनिक या विधिक सहायता उपलब्ध कर देता। लेकिन इन सहयोगियों के होने से दुरमामों में से किसी का भी जोश उठ नहीं पड़ता था। यूँ देखने दिखाने को सबके सामने यह तटस्थ बने रहते और एक दूसरे को लड़ाई बंद कर शांति से बैठकर बात करने का अनुरोध करते। पर मोहल्ले के लोग सब समझते थे और इनके पचड़े में पड़ने से बचते थे।(अब भले क्यों लड़ाई झाड़ें में फंसे,सो ये भी मनमर्जी करते रहते।

दरअसल इस लड़ाई में रामप्रसाद को

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्राय फंज प्रिंटर्स एंड फैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रियल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बांबे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी

कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोक्लि

संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी

स्थानीय संपादक
हेमंत पाल

प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsavereews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सम्बन्ध होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ. प्रेमचंद द्वितीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।



हमारी कॉलोनी में दो जुड़वा भाई रहते हैं जब एक जैसे चेहरे, कद, काठी के दोनों हुए तो माता-पिता ने उनमें से एक का नाम अजब और दूसरे का नाम गजब रख दिया। इनका नाम अजब गजब इसलिए रखा कि कलचुर में अजब गजब की यह जोड़ी अजब गजब धूम मचाएगी। इस तरह अजब और गजब तरह-तरह के नुस्खे इजाद करने लगे। अजब गजब,अजब- गजब,तरीके अपनाते लगे।कुल मिलाकर अजब गजब अनेक क्षेत्रों में रोल मॉडल बन गए!

अजब गजब का इतना मर्तबा बढ़ गया कि घर में, ऑफिस में,व्यापार में, सामाजिक कार्य में,आध्यात्मिक रूझान में,आर्थिक क्षेत्र में, यहां तक

की राजनीति में भी अजब गजब की तरह अजब- गजब तरीके अपनाए जाने लगे।जब राजनीति में सत्ता में आने के लिए रेवड़ी कलचुर चला तो माले मुफ्त,दिल ए बेरहम और मुफ्त खोरी के कारण जिन्हें सत्ता हासिल नहीं हुई वे लोग धिक्कारने लगे। लेकिन इस कलचुर को छोड़,अजब गजब, कलचुर को कुछ उम्मीदवारों ने अपनाया तो जो उम्मीदवार अपनी,अजब गजब, हरकत नहीं करने से राजनीति से जो बाहर हो रहे थे उनके जीवन में, बहार, आ गई। चाहे छोटा चुनाव हो या बड़ा अजब गजब तरीकों से उम्मीदवार,चुनाव जीतने में लग गए। अभी चल रहे चुनाव में उम्मीदवारों ने,अजब गजब, प्रचार किया। और अजब गजब से अजब गजब ढहाने लगे। उन्होंने जनसंपर्क का अजब गजब तरीका

अजब गजब प्रचार से अजब गजब ढहाते उम्मीदवार

अपनाया,वोटर को लुभाने के लिए कोई उम्मीदवार पकोड़े तल रहा है और इस अजब गजब हरकत को अजब गजब तरीके से देख कुछ उम्मीदवार घर में चूल्हे चौके में जाकर रोटियां बेल रहे है वे रोटी बेल कर अलग-अलग तरीके से अपने विरोधी उम्मीदवार के चुनाव के बाद बेल,न होने और जेल में पहुंचाने की अजब गजब बातें पेल रहे है। एक ने तो अजब गजब की पराकाष्ठा कर दी,वह सड़क किनारे बैठकर लोगों की हजामत बनाने का अजब गजब खेल करने लगा। चुनाव में उसने दाढ़ी में हाथ डालने से लेकर दाढ़ी बनाने तक का अजब गजब, तरीका अपनाया। एक उम्मीदवार को अजब गजब सोच आया। वह नेत्र विशेषज्ञ होने से आंखों की जांच कर मतदाता की वोट देने की नजर भापने के लिए

आंखों का इलाज कर रहा।यही नहीं कोई उम्मीदवार अजब गजब राजस्थानी,कश्मीरी ढोल से चर्चित हो रहे है। कोई अपने चुनाव चिन्ह को गले में स्ट्रेथ स्कोप की तरह लगाकर बीमार की फीस नहीं लेकर मतदाताओं को फांस रहे हैं। अजब गजब चुनाव प्रचार को देखकर छूट भैया से माननीय बनने की इन जुड़वा अजब गजब भाइयों ने जब चुनाव लड़ने की ठानी तो अजब गजब तौर तरीकों से चुनाव जीत गए। फिर क्या था अब दोनों एक जैसे सफेद चक,कलफदार कपड़े पहनने लगे, एक जैसी दाढ़ी कटिंग गए जैसे शूज, वे जब अजब गजब दिखने से चर्चा में आने लगे तो उन्होंने हर जगह निमंत्रण आने लगे अजब गजब की जोड़ी जब अभी अतिथि के रूप में जाकर अजब गजब हरकत करती तो लोग

अजब गजब ठहाके लगाकर उनके अजब गजब जलते को और प्रभावी बना देते हैं। अजब गजब हमेशा इसलिए खुश रहते हैं की अजब प्रेम की गजब कहानी इन्हीं को लेकर बनी है और गजब है तेरी माया इसे कोई समझ नहीं पाया,अजब जुदा तो गजब भी जुदा रहता। अजब के साथ अजब की हरकतों ने अनेक फैसले और हकीकतों का गजब आँसु लोको को बता दिया। अजब गजब दुनिया में अजब गजब के आइकॉन हो गए। अजब गजब में से अजब, जब अजब की ड्रेस पहन कर गजब की भीड़ में पहुंचता तो अजब पॉजिटिव लगने लगा और गजब, गजब की भीड़ के कारण नेगेटिव दिखने लगा।इस तरह अजब गजब के खेल ने अजब गजब के दौर में हर कदम अजब तौर पर उठा कर गजब ढहा दिया!

अंधेरे में खोता बचपन

ममता कुशवाहा

लेखक शिक्षक हैं।



कि सी भी सभ्य समाज का सबसे कोमल, सबसे संवेदनशील और सबसे संभावनाशील पक्ष उसका बचपन होता है। बच्चे केवल परिवार की आशा नहीं होते, वे राष्ट्र की आत्मा के भविष्य का प्रारूप भी होते हैं। किंतु आज का यथार्थ इस आदर्श से एकदम विपरीत दिखाई देता है। यह विडंबना ही है कि जिन बच्चों को हम 'देश का भविष्य' कहकर गौरवान्वित करते हैं, वही बच्चे आज बहुस्तरीय खतरों, असुरक्षाओं और शोषण के अंधेरे में धकेले जा रहे हैं। बाल तस्करी, बाल श्रम, यौन शोषण, बाल अपराध, भीख मंगवाने वाले गिरोह, और डिजिटल माध्यमों के जरिए बढ़ते नए खतरे, इन सभी ने बचपन को एक असुरक्षित और भयावह अनुभव बना दिया है।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में बाल तस्करी का जाल एक संगठित अपराध के रूप में उभर चुका है। यह केवल सीमित क्षेत्रों या राज्यों तक सिमटा हुआ मुद्दा नहीं रहा, बल्कि यह एक राष्ट्रीय संकट का रूप ले चुका है। बच्चों की तस्करी के पीछे कई कारण काम करते हैं- गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, सामाजिक असमानता, और प्रशासनिक ढांचे की कमजोरियाँ। गरीब और हाशिए पर खड़े परिवारों के बच्चे इस अपराध का सबसे आसान शिकार बनते हैं। जब कोई परिवार आर्थिक तंगी से जूझ रहा होता है, तब एक बेहतर भविष्य का झूठा सपना दिखाकर या लालच देकर बच्चों को आसानी से फंसाया जा सकता है। यही कारण है कि बाल तस्करी केवल अपराध नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक असंतुलन का भी दुष्परिणाम है।

कोविड-19 महामारी ने इस संकट को और भी गहरा कर दिया। लॉकडाउन, बेरोजगारी और शिक्षा व्यवस्था के बाधित होने से लाखों बच्चे स्कूलों से दूर हो गए और असुरक्षा के घेरे में आ गए। अनेक परिवारों की आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो गई कि बच्चों की देखभाल और शिक्षा पर ध्यान देना मुश्किल हो गया। इस स्थिति का लाभ तस्करो और संगठित गिरोहों ने उठाया। महामारी के बाद लापता बच्चों के

तस्करी और अपराध के शिकंजे में नौनिहाल

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में बाल तस्करी का जाल एक संगठित अपराध के रूप में उभर चुका है। यह केवल सीमित क्षेत्रों या राज्यों तक सिमटा हुआ मुद्दा नहीं रहा, बल्कि यह एक राष्ट्रीय संकट का रूप ले चुका है। बच्चों की तस्करी के पीछे कई कारण काम करते हैं- गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, सामाजिक असमानता, और प्रशासनिक ढांचे की कमजोरियाँ। गरीब और हाशिए पर खड़े परिवारों के बच्चे इस अपराध का सबसे आसान शिकार बनते हैं। जब कोई परिवार आर्थिक तंगी से जूझ रहा होता है, तब एक बेहतर भविष्य का झूठा सपना दिखाकर या लालच देकर बच्चों को आसानी से फंसाया जा सकता है। यही कारण है कि बाल तस्करी केवल अपराध नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक असंतुलन का भी दुष्परिणाम है।

मामलों में जो तेजी आई, वह इस बात का प्रमाण है कि संकट के समय बच्चों की सुरक्षा व्यवस्था कितनी कमजोर पड़ जाती है।

बाल तस्करी के स्वरूप को समझना भी आवश्यक है। यह केवल बच्चों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे शोषण की एक लंबी श्रृंखला जुड़ी होती है। तस्करी के शिकार बच्चों को जबरन मजदूरी, घरेलू काम, कारखानों में खतरनाक काम, यौन शोषण, बाल विवाह, अवैध गोद लेने और यहां तक कि अपराध के नेटवर्क में भी धकेला जाता है। यह एक ऐसा अंधकारमय संसार है, जहां से लौट पाना अधिकांश बच्चों के लिए संभव नहीं होता। जो बच्चे बच भी जाते हैं, उनके मानसिक और शारीरिक घाव जीवन भर उनका पीछे करते हैं।

इस समस्या का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि प्रशासनिक तंत्र और सरकारें इस मुद्दे को लेकर जितनी गंभीरता दिखाती हैं, उतनी नहीं दिखा पा रही हैं। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा बार-बार निर्देश दिए जाने के बावजूद कई राज्यों का लापरवाह रवैया यह दर्शाता है कि इस विषय को अभी भी प्राथमिकता के स्तर पर नहीं रखा गया है। आवश्यक रिपोर्टों का समय पर प्रस्तुत न होना, राज्यस्तरीय समितियों का गठन न होना और तस्करी रोधी इकाइयों की कमजोर स्थिति, ये सभी संकेत हैं कि समस्या के समाधान के लिए इच्छाशक्ति

की कमी है। यह स्थिति तब और अधिक चिंताजनक हो जाती है जब यह समझ आता है कि इन बच्चों का अधिकांश हिस्सा समाज के सबसे कमजोर वर्गों से आता है, जिनकी आवाज पहले ही बहुत कमजोर होती है।

लापता बच्चों का मुद्दा भी बाल तस्करी से गहराई से जुड़ा



हुआ है। हर साल हजारों बच्चे अचानक गायब हो जाते हैं, और उनमें से कई का कोई पता नहीं चल पाता। जो बच्चे मिल जाते हैं, वे भी अक्सर शोषण का शिकार होकर लौटते हैं। लेकिन जो बच्चे कभी वापस नहीं आते, उनकी कहानी अनकही रह जाती है। यह प्रश्न केवल आंकड़ों का नहीं, बल्कि उन अनगिनत परिवारों की पीड़ा का है, जो अपने

बच्चों के लौटने की उम्मीद में हर दिन जीते हैं। एक माँ-बाप के लिए अपने बच्चे का यूँ खो जाना केवल एक व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए एक नैतिक असफलता है।

इसमें सुधार के लिए न्यायपालिका ने कई महत्वपूर्ण कदम सुझाए हैं, जैसे कि तस्करी के मामलों में त्वरित सुनवाई, जांच प्रक्रिया में सुधार, और तस्करी रोधी इकाइयों को सशक्त बनाना। लेकिन केवल निर्देश देने से समस्या का समाधान नहीं होगा, जब तक कि उनका प्रभावी क्रियान्वयन न हो। इसके लिए केंद्र और राज्य सरकारों के बीच बेहतर समन्वय, पुलिस और प्रशासनिक तंत्र की जवाबदेही, और समाज की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। समाज की भूमिका इस पूरे परिदृश्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है। बाल तस्करी केवल सरकारी विफलता नहीं, बल्कि सामाजिक संवेदनहीनता का भी परिणाम है। जब हम अपने आसपास होने वाली सदिध गतिविधियों को नजरअंदाज करते हैं, जब हम

किसी बच्चे को शोषण की स्थिति में देखकर भी चुप रहते हैं, तब हम अनजाने में इस अपराध को बढ़ावा देते हैं। हमें यह समझना होगा कि बच्चों की सुरक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हर नागरिक का कर्तव्य है। जागरूकता, सतर्कता और संवेदनशीलता के बिना इस समस्या से लड़ना संभव नहीं है।

शिक्षा इस समस्या के समाधान का सबसे प्रभावी माध्यम हो सकती है। यदि बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सुरक्षित वातावरण मिले, तो वे तस्करी और शोषण के जाल में फंसने से बच सकते हैं। साथ ही, अभिभावकों को भी जागरूक करना जरूरी है, ताकि वे अपने बच्चों को इस प्रकार के खतरों से बचा सकें। डिजिटल युग में साइबर अपराध और ऑनलाइन तस्करी के नए खतरे भी सामने आ रहे हैं, जिनसे निपटने के लिए विशेष रणनीतियों की आवश्यकता है। सचमें यह समस्या केवल एक सामाजिक मुद्दा नहीं, बल्कि हमारे समय की नैतिक परीक्षा है। यह तय करेगा कि हम एक समाज के रूप में कितने संवेदनशील, जिम्मेदार और मानवीय हैं। यदि हम अपने बच्चों को सुरक्षित, सम्मानजनक और स्वतंत्र जीवन नहीं दे सकते, तो हमारे विकास और प्रगति के सभी दावे खोखले साबित होंगे। यह आवश्यक है कि हम इस समस्या को केवल आंकड़ों और नीतियों के दायरे में न देखें, बल्कि इसे एक मानवीय संकट के रूप में समझें और इसके समाधान के लिए सामूहिक प्रयास करें।

बचपन को बचाना दरअसल भविष्य को बचाना है। यदि आज हम अपने बच्चों को इस अंधेरे से नहीं निकाल पाए, तो आने वाला कल केवल और अधिक भयावह होगा। इसलिए यह समय है कि हम संवेदनहीनता की चादर को हटकर अपने भीतर की मानवता को जगाएँ और यह सुनिश्चित करें कि कोई भी बच्चा इस दुनिया में असुरक्षित और असह्य महसूस न करे। तभी हम एक ऐसे समाज की कल्पना कर सकते हैं, जहाँ बचपन सच में सुरक्षित, स्वतंत्र और खुशहाल हो।

किसानों के लिए समाधान या नया जाल?

कार्बन मार्केट्स

निलेश देसाई

लेखक कृषि मामलों के जानकार हैं।



गौँ व की सरहद पर अपनी मेड़ पर खड़ा किसान जब आसमान की ओर देखता है, तो उसकी आँखों में बारिश की उम्मीद से कहीं ज्यादा अनिश्चितता का डर होता है। जलवायु परिवर्तन ने खेती को पसीने से ज्यादा 'किस्मत' का जुआ बना दिया है। इसी संकट के बीच, वैश्विक कॉर्पोरेट जगत एक नया सपना लेकर आया है- 'कार्बन की खेती'। दावा किया जा रहा है कि अब किसान हवा से कार्बन सोखकर मुनाफा कमाएँगे। लेकिन क्या यह वास्तव में अन्नदाता का उद्धार है, या यह एक नई तरह की 'हरित गुलामी' की शुरुआत है? कार्बन मार्केट्स का विचार मूलतः विकसित देशों और बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की उपज है। ये कंपनियाँ अपने भारी उत्सर्जन को कम करने के बजाय उसे 'ऑफसेट' करने का रास्ता खोजती हैं। इसके लिए वे भारत जैसे विकासशील देशों के किसानों की जमीन को कार्बन सोखने वाले 'स्पंज' की तरह इस्तेमाल करना चाहती हैं। असली प्रदूषक औद्योगिक देशों में बैठे हैं, लेकिन जलवायु सुधार की जिम्मेदारी और निगरानी का बोझ भारत के छोटे किसानों के कंधों पर डाला जा रहा है। भारत सरकार ने हाल के वर्षों में कार्बन क्रेडिट

कार्बन मार्केट्स का विचार मूलतः विकसित देशों और बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की उपज है। ये कंपनियाँ अपने भारी उत्सर्जन को कम करने के बजाय उसे 'ऑफसेट' करने का रास्ता खोजती हैं। इसके लिए वे भारत जैसे विकासशील देशों के किसानों की जमीन को कार्बन सोखने वाले 'स्पंज' की तरह इस्तेमाल करना चाहती हैं। असली प्रदूषक औद्योगिक देशों में बैठे हैं, लेकिन जलवायु सुधार की जिम्मेदारी और निगरानी का बोझ भारत के छोटे किसानों के कंधों पर डाला जा रहा है। भारत सरकार ने हाल के वर्षों में कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग स्कीम (सीसीटीएस) और ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम जैसे कदम उठाए हैं। कृषि मंत्रालय ने भी 'स्वैच्छिक कार्बन मार्केट' का दांचा पेश किया है। कागजों पर यह आधुनिक दिखता है, लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि इन नीतियों में छोटे किसानों की सुरक्षा और उनके लाभ का हिस्सा बेहद धुंधला है। 10 से 20 साल के कठोर अनुबंध किसान की जमीन को कॉर्पोरेट निगरानी के हवाले कर देते हैं।

ट्रेडिंग स्कीम (सीसीटीएस) और ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम जैसे कदम उठाए हैं। कृषि मंत्रालय ने भी 'स्वैच्छिक कार्बन मार्केट' का ढांचा पेश किया है। कागजों पर यह आधुनिक दिखता है, लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि इन नीतियों में छोटे किसानों की सुरक्षा और उनके लाभ का हिस्सा बेहद धुंधला है। 10 से 20 साल के कठोर अनुबंध किसान की जमीन को कॉर्पोरेट निगरानी के हवाले कर देते हैं।

कार्बन प्रोजेक्ट की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि यह जलवायु परिवर्तन के 'जोखिम' को उसी पर डाल देता है जो इसका सबसे बड़ा शिकार है। यदि सूखा, बाढ़ या कीटों के हमले से खेत की कार्बन सोखने की क्षमता घटती है, तो सजा किसान को मिलती है। उसका भुगतान रोक दिया जाता है या उस पर जुर्माना लगाया जाता है। कंपनियाँ और बिचौलिये सुरक्षित रहते हैं, जबकि किसान इस



चक्रव्यूह की सबसे कमजोर कड़ी बन जाता है। जब 'कार्बन डॉलर' का बंटवारा होता है, तो अंतरराष्ट्रीय दलाल, डेटा एजेंसियाँ और तकनीकी

सलाहकार उसका बड़ा हिस्सा डकार जाते हैं। किसान तक पहुँचने वाली राशि इतनी कम होती है कि वह एक बोरी खाद की कीमत भी पूरी नहीं कर पाती। साथ ही, यह मॉडल भारतीय कृषि की रिड-महिला किसानों-को पूरी तरह अदृश्य कर देता है। भुगतान केवल जमीन के मालिक को मिलता है, जबकि मिट्टी को सहेजने वाली महिलाओं और भूमिहीन श्रमिकों का इसमें कोई स्थान नहीं है। यदि किसान केवल कार्बन क्रेडिट के लालच या दबाव में आकर फसल पैटर्न बदलने लगे, तो देश की खाद्य सुरक्षा का क्या होगा? अनाज और दालों की जगह 'कार्बन-फ़ैडली' फसलों को प्राथमिकता

देना 'हवा साफ करने' के नाम पर 'थाली खाली' करने जैसा हो सकता है। सबसे बड़ा हमला किसान की स्वतंत्रता पर है। अनुबंध के बाद किसान यह तय नहीं कर सकता कि उसे अपनी जमीन पर क्या और कैसे बोना है। वह अन्नदाता से एक 'अनुबंध-मजदूर' में बदल जाता है। किसानों को बाजार के रहस्यों-कर्म पर छोड़ना आत्मघाती होगा। हमें पीईएस (पेमेंट इकोसिस्टम सर्विसेस) जैसे मॉडल की जरूरत है, जहाँ किसान को केवल कार्बन के लिए नहीं, बल्कि मिट्टी सुधार, जल संरक्षण और जैव विविधता के लिए सीधे सार्वजनिक वित्त से समर्थन मिले। यह 'प्रदूषक भुगतान कर' (पाल्यूट पेज प्रिंसिपल) के सिद्धांत पर आधारित होना चाहिए। जलवायु परिवर्तन से लड़ाई जरूरी है, लेकिन यह किसान की गरिमा और स्वायत्तता की कीमत पर नहीं होनी चाहिए। भारत को ऐसी नीतियों की आवश्यकता है जो किसानों को 'कॉर्पोरेट नेट-जीरो' का साधन बनाने के बजाय उन्हें पारिस्थितिकी तंत्र के रक्षक के रूप में सशक्त करें।

विश्व-रंग

डॉ. सुधीर सक्सेना



इ तिहास गवाह है कि दुनिया के नौ देशों पास परमाणु बम हैं, लेकिन केवल एक ने ही अब तक उनका इस्तेमाल किया है और वो देश..... अमेरिका है। यह कहना है जियोर्जिया मेलोनी का। जियोर्जिया मेलोनी योरोपीय राष्ट्र इटली की प्रधानमंत्री हैं, निर्वाचित प्रधानमंत्री। यह बात उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के इस आशय के बयान के उत्तर में कही, जिसमें ट्रंप ने ईरान के 'इस्लामी बम' से लोगों को डराया था और गैर-इस्लामी मुलकों का समर्थन हासिल करना चाह था। ट्रंप योरोपीय देशों को 'हैव्वा' दिखाकर आगाह करना चाहते थे कि सावधान, अगर ईरान के हाथों में बम आ गया, तो तुम्हारा क्या हज़्र होगा?

ट्रंप के वक्तव्य और मेलोनी के प्रति-वक्तव्य से स्पष्ट है कि अमेरिका और इटली के मध्य दरार दिनों-दिन चौड़ी होती जा रही है। विश्व की सर्वोच्च ताकत अमेरिका का राष्ट्रपति होने के नाते ट्रंप तमाम देशों को तुच्छ या दबैल मानने की 'ग्रंथि' से पीड़ित हैं और जब-तब उन्हें धमकाते या गरियाते रहते हैं। वह किसी भी राष्ट्रध्यक्ष या प्रतिष्ठित व्यक्ति का मखौल उड़ाने अथवा तंज कसने में भी बाज नहीं आते। गत दिनों कैथोलिक ईसाइयों के धर्मगुरु पोप ने उन्हें आईना दिखाया, किंतु उसके बाद भी वह अपने बड़बोलपन पर अड़िगा रहे। उनके बयान की इतालवी संसद में तीखी प्रतिक्रिया हुई और इटली के सर्वोच्च सदन में सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष ने एक सुर में ट्रंप के बयान पर ऐतराज जताया। इतालवी संसद में नेता प्रतिपक्ष सुश्री एली श्लेन ने गरजते हुये कहा कि कोई भी विदेशी राष्ट्रध्यक्ष मेरे देश और मेरी सरकार का अपमान नहीं कर सकता। ट्रंप को खरी खोटी सुनाते हुये श्लेन ने दो टूक कहा - 'सुन लो, ट्रंप। भले ही हम राजनीतिक कि प्रतिद्वंद्वी हों, लेकिन हम इतालवी जने अपने देश पर

मेलोनी और ट्रंप के रिश्तों में खटास

ट्रंप के वक्तव्य और मेलोनी के प्रति-वक्तव्य से स्पष्ट है कि अमेरिका और इटली के मध्य दरार दिनों-दिन चौड़ी होती जा रही है। विश्व की सर्वोच्च ताकत अमेरिका का राष्ट्रपति होने के नाते ट्रंप तमाम देशों को तुच्छ या दबैल मानने की 'ग्रंथि' से पीड़ित हैं और जब-तब उन्हें धमकाते या गरियाते रहते हैं। वह किसी भी राष्ट्रध्यक्ष या प्रतिष्ठित व्यक्ति का मखौल उड़ाने अथवा तंज कसने में भी बाज नहीं आते। गत दिनों कैथोलिक ईसाइयों के धर्मगुरु पोप ने उन्हें आईना दिखाया, किंतु उसके बाद भी वह अपने बड़बोलपन पर अड़िगा रहे। उनके बयान की इतालवी संसद में तीखी प्रतिक्रिया हुई और इटली के सर्वोच्च सदन में सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष ने एक सुर में ट्रंप के बयान पर ऐतराज जताया। इतालवी संसद में नेता प्रतिपक्ष सुश्री एली श्लेन ने गरजते हुये कहा कि कोई भी विदेशी राष्ट्रध्यक्ष मेरे देश और मेरी सरकार का अपमान नहीं कर सकता। ट्रंप को खरी खोटी सुनाते हुये श्लेन ने दो टूक कहा - 'सुन लो, ट्रंप। भले ही हम राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी हों, लेकिन हम इतालवी जने अपने देश पर होने वाले हमलों को बर्दाश नहीं करेंगे, खासकर तुम्हारी तरफ है।'

होने वाले हमलों को बर्दाश नहीं करेंगे, खासकर तुम्हारी तरफ है।'

इटली की सेंट्रल लेफ्ट विपक्षी पार्टी डेमोक्रेटिक- पार्टी की नेत्री श्लेन की मेलोनी के साथ एकजुटता ने ट्रंप को बेतरह हैरान कर दिया है। कुछ अर्सा पहले तक मेलोनी ट्रंप की विश्वसनीय सखी समझी जाती थीं। एक छमाही पहले की बात है, जब शर्म-अल-शेख में मेलोनी और तमाम नेता गाजा शांति योजना पर विचार के लिये एकत्र हुये थे। तब ट्रंप ने मेलोनी की शान में कसीदे काढ़ते हुये कहा था- 'यू डॉट माइंड बीइंग काल्ड ब्यूटीफुल, राइट' मेलोनी की और मुखतिब ट्रंप के बोल थे - आप वाकई खूबसूरत हैं, आपके आने का शुक्रिया। ट्रंप की तारीफ से मेलोनी असहज तो हुई, लेकिन उन्होंने तारीफ कुबूल कर स्वयं को ट्रंप की सच्ची दोस्त साबित करने में कसर नहीं उठा रखी थी। यही नहीं, वह ट्रंप के पदग्रहण पर भी गयीं और फ्लोरिडा में उनके मार-अ-लागो कंट्री क्लब का फौरी दौरा भी किया। मगर उनका यह रिश्ता कपूर की नाई उड़ गया। इसी हफ्ते एक



इतालवी पत्र को दिये इन्टरव्यू में ट्रंप ने ईरान के साथ युद्ध में अमेरिका का साथ नहीं देने के लिये मेलोनी को आड़े हाथों लेते हुये कहा कि उनमें साहस की कमी है। ट्रंप ने मेलोनी के रवैये को नाकाबिले-बर्दाशत बताते हुये कहा कि मेलोनी को इस बात की फिक्र नहीं है कि यदि इटली के पास परमाणु बम होता तो वह दो मिन्ट में उड़ा देता। ट्रंप ने मेलोनी पर यह फबती तब कसी, जब

मेलोनी इटली में घरेलू मोर्चे पर अपनी छवि और नीतियों को लेकर विवादों में उलझी हुई थीं। ट्रंप के प्रति झुकाव के लिये भी वह नुकाची की शिकार थी और शर्म-अल-शेख में ट्रंप के 'कमेंट' की भी अच्छी प्रतिक्रिया नहीं हुई थी। अपनी छवि सुधारने के लिये मेलोनी को मौके की तलाश थी और पोप-प्रकरण ने उन्हें वह मौका थमा दिया। मेलोनी यह बखूबी जानती हैं कि इटली में लागू पोप से प्यार और युद्ध से घृणा करते हैं। इतालवी जनों की इस मनोदेशा का मेलोनी ने लाभ उठाया और 28 फरवरी को ईरान पर अमेरिका-इस्त्रायल के साझा हमले के बाद ट्रंप से फासला बरतने का क्रम शुरू हुआ। उन्होंने सतर्कतापूर्वक ईरान और अमेरिका से 'सम-दूरी' की नीति अपनाई। उन्होंने कहा कि हमें अयातुल्लाह का ऐसा ईरान नहीं चाहिये, जिसके पास अणु बम है और जो इटली और योरोप का डराये। ऐसे ही उन्होंने ईरान-अमेरिका जंग में अमेरिका की मदद के लिये इतालवी

फौजी भेजने से इंकार कर दिया। इसमें शक नहीं कि मेलोनी अपनी छवि को लेकर अत्यंत सचेत हैं। रेफेरेंडम में पराजय ने अतिरिक्त सचेत बना दिया है। इसी के चलते उन्होंने अमेरिका को ताजा जंग में सिसिली के एयरबेस में उपयोग की इजाजत नहीं दी। अमेरिका चाहता था कि उसके फौजी विमानों को यह सुविधा मिले। उनकी सतर्कता का आलम यह था कि वह पोप प्रकरण पर कुछ नहीं कहना चाहती थीं, लेकिन विपक्ष ने उन्हें स्पष्ट रुख अखिराय करने को बाध्य कर दिया। उन्होंने कहा कि शांति की बहाली की मांग पोप का हक है। यकीनन मेलोनी तनी हुई रस्सी पर चल रही हैं, जहाँ जरा सी चूक घातक हो सकती है। वह जानती है कि इटली में आले वर्ष आम चुनाव है और इतालवी जनता की वैश्विक घटनाक्रम में अधिक रुचि भले ही नहीं हो, किंतु ईरान-अमेरिका की जंग लंबी खिंचने से इतालवियों को मंहगाई और ऊर्जा संकट का सामना करना पड़ेगा। इसी अवधारणा के तहत उन्होंने इस्त्रायल के साथ सामरिक - संधि तोड़ ली है। फ्रांस के ईमैन्युएल मैक्रों और ब्रिटेन के कोर स्टार्मर के साथ उनकी मुलाकात पर अमेरिका और सारे योरोप की उत्सुक निगाहें हैं। अंदाज यही है कि मेलोनी और ट्रंप के रिश्तों में उपजी खटास नये गुल खिला सकती है।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम के तहत धार जिले में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन; महिलाओं की भागीदारी अब 14% से बढ़कर हुई 33%

धार। भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम लागू किया गया है, जिसके अंतर्गत महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को 14 प्रतिशत से बढ़ाकर 33 प्रतिशत कर दिया गया है। मध्य प्रदेश शासन के निर्णयानुसार, इस ऐतिहासिक उपलब्धि को पूरे प्रदेश में उत्सव के रूप में मनाया जा रहा है। इसी क्रम में 10 अप्रैल से 25 अप्रैल तक 'नारी शक्ति वंदन पखवाड़ा' आयोजित किया जा रहा है।

महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी सुभाष जैन के निर्देशानुसार, यह उत्सव जिला, विकासखंड, शहरी एवं ग्रामीण परियोजना स्तर पर उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। पखवाड़े के दौरान नारी शक्ति पदयात्रा, दीवार लेखन, संगोष्ठी और व्याख्यान माला जैसी गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं, जिनमें महिला समूह, लखपति दीदी और लाडली बहनों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की गई है।

वन स्टॉप सेंटर, धार द्वारा शहर के चितनिस चौक क्षेत्र में



स्लॉट बुक नहीं होने से किसान हो रहे परेशान, खरीदी की रफ्तार भी पड़ी धीमी

सैटेलाइट इमेजिंग और पटवारी के गिरदावरी डेटा के बीच अंतर

एस. द्विवेदी, बैतूल। जिले में गेहूँ की सरकारी खरीदी जारी है, लेकिन किसानों को अपनी ही फसल बेचने के लिए सोसायटी और तहसील के चक्र काटने को मजबूर होना पड़ रहा है। इसका मुख्य कारण सैटेलाइट इमेजिंग और पटवारी के गिरदावरी डेटा के बीच का अंतर है। शासन ने इस बार पारदर्शिता के लिए सैटेलाइट डेटा अनिवार्य कर दिया है, लेकिन फील्ड स्तर पर विसंगतियों के कारण सत्यापन की प्रक्रिया किसानों के लिए गले की फांस बन गई है। वर्तमान में जब किसान स्लॉट बुक कर रहा है, तब उस पता चल रहा है कि उसका डेटा मिसमैच है। दरअसल सैटेलाइट के माध्यम से हुई गिरदावरी में कई बार फसल की पहचान गलत हो जाती है। उदाहरण के लिए यदि किसान ने खेत के एक हिस्से में सरसों और बड़े हिस्से में गेहूँ बोया है, तो तकनीक कभी-कभी पूरे रकबे को अन्य फसल में दिखा देती है। इससे गेहूँ बेचने के लिए पंजीकृत रकबा कम या शून्य हो जाता है। इस खामी को देखते हुए शासन ने निर्देश दिए हैं कि जिन किसानों के डेटा में विसंगति है, उनका भौतिक सत्यापन पटवारी करेंगे। अब समस्या यह आ रही है कि पटवारियों ने जो डेटा सारा ऐप पर फोटो खींचकर अपलोड किया है, उसी को दोबारा प्रतिवेदन के साथ सत्यापित करना पड़ रहा है। इस दोहरी प्रक्रिया और सर्वर डाउन होने से समय लग रहा है।

लिखित प्रतिवेदन की अनिवार्यता से भी बड़ी परेशानी- बताया जा रहा है कि पटवारियों को अब लिखित में प्रतिवेदन भी देना पड़ रहा है। जब तक यह



प्रतिवेदन सोसायटी और पोर्टल पर अपडेट नहीं होता, तब तक किसान का स्लॉट बुकिंग नहीं हो पा रहा है। किसानों का कहना है कि तकनीकी खामी, सत्यापन प्रक्रिया खरीदी शुरू होने से पहले ही पूरी कर ली जानी चाहिए थी। अब किसानों को डर है कि स्लॉट बुक न होने से सरकारी खरीदी की तारीख न निकल जाए। इस चक्र से बचने के लिए कई किसान मजबूरी में अपनी उपज व्यापारियों को औने-पौने दामों पर बेच रहे हैं।

सिर्फ छोटे किसानों के ही हो रहे स्लॉट बुक- पहले गेहूँ खरीदी में देरी से किसान परेशान थे। अब स्लॉट बुक नहीं होने से किसानों को चिंता सताने लगी है। मंडी में गेहूँ के दाम नहीं मिलने से किसान सरकारी खरीदी में गेहूँ बेचने का इंतजार कर रहे हैं। वहां भी 5 एकड़ से कम रकबे के स्लॉट बुक हो रहे हैं। वहीं सैटेलाइट वरिफिकेशन में किसानों के पंजीयन भी रिजक्ट हो रहे हैं। इसके चलते स्लॉट बुकिंग नहीं हो पा रहे हैं। बता दें कि इस बार गेहूँ खरीदी के लिए 18969 किसानों ने पंजीयन करवाए हैं।

पावर प्लांट से पाँच हजार लोगों को मिलेगा रोजगार: उप मुख्यमंत्री

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने नवीन सर्किट हाउस सभागार रीवा में आयोजित बैठक में कहा कि टाटा एनर्जी रीवा जिले में ऊर्जा की बड़ी परियोजना शुरू करने जा रही है। टाटा एनर्जी 28 हजार करोड़ रुपए निवेश करके पावर प्लांट स्थापित करने जा रही है। इस प्लांट से एक हजार मेगावाट से अधिक बिजली का उत्पादन होगा। इससे क्लोन और ग्रीन एनर्जी के साथ-साथ पाँच हजार से अधिक व्यक्तियों को रोजगार के अवसर मिलेंगे। परियोजना के लिए आवश्यक जमीनें चिन्हित कर ली गई हैं। मध्यप्रदेश औद्योगिक विकास निगम 169 हेक्टेयर जमीन टाटा एनर्जी को आवंटित कर रहा है। शेष जमीनों का अधिग्रहण करके टाटा एनर्जी को उपलब्ध कराएँ, जिससे परियोजना का कार्य शीघ्र शुरू किया जा सके। सोलर एनर्जी के बाद यह रीवा जिले के लिए दूसरी बड़ी उपलब्धि होगी।

बैठक में उप मुख्यमंत्री ने कहा कि रीवा में अधोसंरचना का विकास तेजी से हुआ है। इसका लाभ अब जिले को मिलने लगा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की विशेष पहल पर रीवा में इंडस्ट्रियल कॉन्क्लेव का आयोजन किया गया। कई क्षेत्रों के उद्योगपति रीवा में निवेश के इच्छुक हैं। एयरपोर्ट, सड़क, रेलवे लाइन और पानी की उपलब्धता से निवेश को प्रोत्साहन मिल रहा है। टाटा एनर्जी की परियोजना से जिले के औद्योगिक विकास को गति मिलेगी। परियोजना के लिए आवश्यक भूमि उपलब्ध कराने के लिए राजस्व विभाग तथा वन विभाग के अधिकारी समन्वय से प्रयास करें। बैठक में कमिश्नर बीएस जामोद ने बताया कि परियोजना के लिए आवश्यक जमीनें तय समय सीमा में टाटा एनर्जी को उपलब्ध करा



उप मुख्यमंत्री ने झलबदरी तालाब सौन्दर्यीकरण कार्य का किया निरीक्षण

उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने रीवा में झलबदरी तालाब के सौंदर्यीकरण कार्य एवं मातंड क्रमांक 2 के निर्माण कार्य का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए तथा सभी कार्यों को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिये।

दी जाएगी। निजी जमीनों को टाटा एनर्जी स्वयं प्राप्त करेगी। प्रशासनिक स्तर पर पूरा सहयोग किया जा रहा है।

बैठक में उप मुख्यमंत्री ने कहा कि रीवा एयरपोर्ट से केवल 30 मिनट की दूरी पर मैरु जिले में अमझर में 170 हेक्टेयर जमीन चिन्हित की गई है। एमपीआईडीसी के अधिकारी इसमें निवेश के लिए केन्द्र सरकार की भारत औद्योगिक विकास योजना (भव्य योजना) के तहत प्रस्ताव बनाएँ। बैठक में एमपीआईडीसी के कार्यकारी निदेशक यूके तिवारी ने बताया कि अमझर में औद्योगिक पार्क में 50 से अधिक औद्योगिक इकाईयों स्थापित की जाएगी। औद्योगिक केन्द्र के लिए अतिरिक्त भूमि की भी तलाश की जा रही है। बैठक में सौसीएफ राजेश राय ने कहा कि वन भूमि में

अनुमति के लिए ऑनलाइन आवेदन करने पर समय सीमा में अनुमति जारी कर दी जाएगी। बैठक में कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने कहा कि जिले में निवेश करने वाले उद्योगियों को हर संभव सहायता दी जाएगी। जिले के औद्योगिक विकास में तेजी के लिए निवेश आवश्यक है। अमझर में प्रस्तावित औद्योगिक पार्क का लाभ भी रीवा जिले को मिलेगा। बैठक में टाटा एनर्जी के प्रतिनिधियों ने प्रस्तावित परियोजना की विस्तार से जानकारी दी। टाटा एनर्जी के प्रतिनिधियों ने प्रशासनिक अधिकारियों से मिल रहे सहयोग की प्रशंसा की। बैठक में अध्यक्ष नगर निगम व्यक्तेश पाण्डेय, एसडीएम सिरमौर दृष्टि जायसवाल, कार्यपालन यंत्री पीडब्ल्यूडी नितिन पटेल तथा टाटा एनर्जी के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

ब्राह्मण समाज द्वारा परशुराम चौक पर चलाया स्वच्छता अभियान

बैतूल। परशुराम जयंती के उपलक्ष्य में शुक्रवार को सुबह 8 बजे शहर के परशुराम चौक पर स्वच्छता सेवा कार्य का आयोजन विप्र समाज के बैनर तले किया गया। इस अभियान में ब्राह्मण समाज के अलावा सभी वर्गों के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और स्वच्छ भारत के संकल्प को साकार करने की दिशा में अपना योगदान दिया। कार्यक्रम के दौरान परशुराम चौक एवं उसके आसपास के क्षेत्रों की साफ-सफाई कर कचरे का उचित निस्तारण किया गया तथा आम नागरिकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। यह पहल न केवल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, बल्कि समाज में स्वच्छता के प्रति जिम्मेदारी का भाव भी जागृत करती है। कार्यक्रम के अंत में सभी ने मिलकर अपने शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाने का संकल्प लिया। इस दौरान नगर पालिका के पार्षद आनंद प्रजापति, समाजसेवी सुनील द्विवेदी, संजय पम्पी शुक्ला, भाजपा मंडल अध्यक्ष विकास मिश्रा एवं विक्रम शर्मा, मनीष मिसर, पर्यावरणविद तरुण वैद्य, पं. दुबेजी, नीलम दुबे सहित नया बैतूल की स्वच्छता टीम के स्वच्छता निरीक्षक संतोष धनेलिया एवं बड़ी संख्या में परशुराम सेना के कार्यकर्ता व विप्र समाज के लोग तथा आमजन उपस्थित थे।

स्वच्छता सेवा अभियान - आज परशुराम चौक, बैतूल में स्वच्छता सेवा कार्य का आयोजन किया गया। इस अभियान में समाज के सभी वर्गों के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और स्वच्छ भारत के संकल्प को साकार करने की दिशा में अपना योगदान दिया।

कार्यक्रम के दौरान चौक एवं आसपास के क्षेत्रों की साफ-सफाई की गई, कचरे का उचित निस्तारण किया गया तथा आम नागरिकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया।

भोपाल में लगे इस्लामिक जिहाद मुर्दाबाद के नारे, दाढ़ी-टोपी वाला पुतला लेकर पहुंचे कार्यकर्ता

नासिक आईटी कंपनी विवाद पर बजरंग दल का प्रदर्शन

भोपाल (नप्र)। महाराष्ट्र के नासिक की टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) की इकाई में महिला कर्मचारियों के यौन शोषण, मानसिक प्रताड़ना और जबरन धर्म परिवर्तन के दबाव के मामले को लेकर भोपाल में बजरंग दल विरोध कर रहा है। बुधवार को एमपी नगर क्षेत्र में बजरंग दल के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में पहुंचे और जमकर नारेबाजी की।

प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग करते हुए नारे लगाए। इनमें 'इस्लामिक जिहाद मुर्दाबाद', 'देश के गद्दरों को गोली मारो', 'लव जिहाद बंद करो' जैसे नारे शामिल रहे। इस दौरान कुछ कार्यकर्ता दाढ़ी-टोपी वाला पुतला भी लेकर पहुंचे, जिसके साथ उन्होंने प्रदर्शन किया। मौके पर भारी



पुलिस बल तैनात रहा।

पदाधिकारी बोले- यह काँपैरट जिहाद- बजरंग दल के पदाधिकारियों ने कहा कि नासिक

ज़हर मामले में सामने आए आरोप बेहद गंभीर हैं। उन्होंने इसे 'काँपैरट जिहाद' करार देते हुए दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग

कटनी में ब्लॉक, 18 अप्रैल को बीना-कटनी मेमू आंशिक निरस्त

मुख्य स्टेशन की जगह कटनी मुडवारा तक ही चलेगी ट्रेन

भोपाल (नप्र)। कटनी रेलवे स्टेशन पर लाइन कार्य के चलते 18 अप्रैल को ब्लॉक लिया जाएगा। इसके कारण भोपाल मंडल में संचालित बीना-कटनी मेमू का परिचालन एक दिन के लिए प्रभावित रहेगा।

रेलवे प्रशासन के अनुसार गाड़ी संख्या 11601/11602 बीना-कटनी-बीना मेमू दोनों दिशाओं में कटनी स्टेशन तक नहीं जाएगी। यह ट्रेन केवल कटनी मुडवारा तक ही संचालित होगी। इस वजह से कटनी मुडवारा से कटनी के बीच का हिस्सा 18 अप्रैल को आंशिक रूप से निरस्त रहेगा।

यात्रियों को सलाह

रेलवे ने यात्रियों से अपील की है कि यात्रा से पहले ट्रेन की स्थिति की जानकारी जरूर प्राप्त करें। इसके लिए अधिकृत रेलवे पृष्ठताछ सेवा एनटीईएफ/139 और रेल मदद का उपयोग किया जा सकता है, ताकि किसी प्रकार की असुविधा से बचा जा सके।

आयोजित एक धार्मिक कार्यक्रम के दौरान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में महिलाओं को बताया गया कि अब वे संसद और विधानसभाओं में 33त आरक्षण की पात्र हैं, जिससे वे अपने मत का प्रयोग स्वयं के नेतृत्व के लिए कर सकेंगी। इस अवसर पर पूर्व पार्षद अनीता महालक्ष्मी ने महिलाओं को अधिनियम की बधाई दी। वहीं, आर्य समाज के प्रधान श्री लाखन सिंह ठाकुर ने महिला सशक्तिकरण के प्रयासों की सराहना करते हुए महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने हेतु प्रोत्साहित किया।

सामाजिक गतिविधियों के अंतर्गत जिला भोज चिकित्सालय में भी महिलाओं को अधिनियम की जानकारी दी गई। उन्हें समझाया गया कि समाज में अब उनके अधिकार पुरुषों के समान सुनिश्चित किए गए हैं। कार्यक्रम के दौरान महिलाओं को नारी शक्ति वंदन के समर्थन हेतु टोल-फ्री नंबर पर मिस कॉल भी करवाया गया। इस अवसर पर जूडो-कारेट प्रशिक्षक कुमुकुम श्रीवास्तव सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

सेन्ट पैट्रिक स्कूल में जनगणना 2027 का तीन दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित, एसडीएम भल्लावी ने कहा गुणवत्ता से हो जनगणना

सोहागपुर। सेन्ट पैट्रिक स्कूल में जनगणना

2027 का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका चोपड़ा एवं तहसीलदार आर एस झरबड़े के आतिथ्य में प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर एसडीएम भल्लावी ने प्रशिक्षणार्थियों को कहा कि उक्त जनगणना काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह 2011 के बाद आयोजित की जा रही है। इस कारण जनगणना के कार्य को उत्कृष्टता पूर्वक करें। ताकि इस जनगणना से कोई व्यक्ति या परिवार न छूट सके। इस अवसर पर 6मास्टर ट्रेनर बृजेन्द्र वर्मा, विपिन गिल्ला, राकेश रघुवंशी, रामकिशोर दुबे, राहुल तिवारी एवं जितेंद्र तिवारी ने जनगणना 2027 के प्रथम चरण अंतर्गत प्रणकों एवं पर्यवेक्षकों सुपरवाइजर को प्रशिक्षण प्रदान किया। प्रशिक्षण प्रदान कर्ताओं ने प्रथम दिवस प्रथम सत्र में कुल 150 प्रशिक्षणार्थियों को 3 कक्षाओं में व्यवस्थित रूप से प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जिसमें द्वारा प्रत्येक कक्ष में 2-2 ट्रेनर्स के माध्यम से प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के अवसर पर समस्त प्रशिक्षणार्थियों को जनगणना से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी एवं कार्यप्रणाली विस्तार से सभी प्रश्नों का सत्य/सही उत्तर देना धारा 8 के अंतर्गत अनिवार्य है। अंतिम सर्वाभिनय से पहले, स्व-गणना के माध्यम से दर्ज ऑकड़ों की पर्यवेक्षकों द्वारा की जाएगी स्व-गणना (सेल्फ-इन्सुरेशन) की सुविधावर बैठे अपनी सारी जानकारी सेल्फ-एन्युमरेशन पोर्टल के माध्यम से 17 अप्रैल 2026 से 1 मई 2026 के बीच भरने की सुविधाआवास की स्थिति, परिवार का विवरण, बुनियादी सुविधाओं और घरेलू उपकरणों की उपलब्धता पर केंद्रित कुल 33 सवाल हैं। उक्त पोर्टल 17 अप्रैल 2026 से कार्य करेगा। जिसमें सभी प्रश्नों का सत्य/सही उत्तर देना धारा 8 के अंतर्गत अनिवार्य है। अंतिम सर्वाभिनय से पहले, स्व-गणना के माध्यम से दर्ज ऑकड़ों की पर्यवेक्षकों द्वारा की जाएगी स्व-गणना (सेल्फ-इन्सुरेशन) सरल, सुरक्षित और डिजिटल सुविधा कैसे करें स्व-गणना आधिकारिक पोर्टल पर जाएँ 6 सर्वाभिनय के बाद से आईडी मिलेगा।

उल्लेखनीय स्वगणनाउल्लेखनीय है कि भारत की जनगणना 2027 में आखिर खाय यह है कि पहली बार डिजिटल मोड में आयोजितपहले



चरण में नागरिकों के लिए स्व-गणना (सेल्फ-इन्सुरेशन) की सुविधावर बैठे अपनी सारी जानकारी सेल्फ-एन्युमरेशन पोर्टल के माध्यम से 17 अप्रैल 2026 से 1 मई 2026 के बीच भरने की सुविधाआवास की स्थिति, परिवार का विवरण, बुनियादी सुविधाओं और घरेलू उपकरणों की उपलब्धता पर केंद्रित कुल 33 सवाल हैं। उक्त पोर्टल 17 अप्रैल 2026 से कार्य करेगा। जिसमें सभी प्रश्नों का सत्य/सही उत्तर देना धारा 8 के अंतर्गत अनिवार्य है। अंतिम सर्वाभिनय से पहले, स्व-गणना के माध्यम से दर्ज ऑकड़ों की पर्यवेक्षकों द्वारा की जाएगी स्व-गणना (सेल्फ-इन्सुरेशन) सरल, सुरक्षित और डिजिटल सुविधा कैसे करें स्व-गणना आधिकारिक पोर्टल पर जाएँ 6 सर्वाभिनय के बाद से आईडी मिलेगा।

जिसमें अपने मोबाइल नंबर से ओटीपी द्वारा लॉगिन करें। 17 से आईडी सुरक्षित रखें। अपना राज्य, जिला और स्थानीय विवरण चुनें। प्राणक (इन्सुरेटर) आने पर से आईडी दे। डिजिटल मानचित्र पर अपने घर का स्थान चिन्हित करें। प्राणक जानकारी की पुष्टि करेंगे। विकास, प्रगति, मकान एवं परिवार से संबंधित जानकारी भरें। इसके लाभ समय की बचत सटीक जानकारी दें। यदि आप स्व-गणना नहीं कर पाते हैं, तो चिंता न करें, निर्धारित अवधि में प्राणक आपके घर आकर जानकारी अवश्य दर्ज करेंगे। तेज डेटा प्रसंस्करण। आपके सभी जानकारी पूरी तरह गोपनीय और सुरक्षित रहेगी। प्रशासन ने आश्वासन दिया है कि जनता-जनार्दन जनगणना में हिस्सा लें।

कैबिनेट मंत्री नारायण सिंह कुशवाह ने प्रदेश कार्यालय में कार्यकर्ताओं से किया संवाद



भोपाल। मध्यप्रदेश शासन के कैबिनेट मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने शुक्रवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में प्रदेश भर से आए पार्टी कार्यकर्ताओं से संवाद किया।

मध्यप्रदेश शासन के कैबिनेट मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने प्रदेश भर से आए पार्टी कार्यकर्ताओं एवं आमजनों से संवाद कर उनकी जनसमस्याओं का त्वरित समाधान किया। जिन समस्याओं का तत्काल समाधान नहीं किया जा सका, उन्हें संबंधित विभागों को निराकरण के लिए भेजा गया है। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं से संवाद करते हुए उनकी कठिनाइयों को समझा और उन्हें जल्द से जल्द समाधान दिलाने का आश्वासन दिया।

जनगणना 2027 : प्रणक पर्यवेक्षकों को मैदानी कार्य से पहले दिया गहन प्रशिक्षण

बैतूल। जिले में जनगणना 2027 को सुव्यवस्थित, पारदर्शी एवं समयबद्ध तरीके से संपन्न कराने के लिए कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी श्री डॉ. सौरभ संजय सोनवणे तथा अपर कलेक्टर एवं जिला जनगणना अधिकारी श्रीमती वंदना जाट के निर्देशानुसार प्रणकों एवं पर्यवेक्षकों के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण 15 से 17 अप्रैल तक जिले में ग्रामीण चार्ज अंतर्गत तहसील आमला, आठनर, बैतूल, भैंसदेही, भीमपुर, घोड़डोंगरी, मुलतारी, प्रभातपट्टन तथा शाहपुर में आयोजित कर जनगणना कार्य से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इसके अंतर्गत फील्ड ट्रेनर्स द्वारा 733 प्रणकों एवं 124 पर्यवेक्षकों को प्रशिक्षित किया गया है।

प्रशिक्षण के प्रथम दिवस में प्रतिभागियों को जनगणना का परिचय, कानूनी प्रावधान, प्रणकों एवं पर्यवेक्षकों की भूमिका एवं कर्तव्यों सहित आवश्यक अवधारणाओं एवं परिभाषाओं की जानकारी दी गई। साथ ही एचएलओ मोबाइल एप के प्रभावी उपयोग (यूटिलिटी) एवं उसकी विशेषताओं से अवगत कराया गया। द्वितीय दिवस में एचएलओ एप के 33 प्रश्नों के संकलन की शैली, अवधारणाओं एवं परिभाषाओं पर गहन प्रशिक्षण दिया गया तथा एप के माध्यम से डेटा संकलन एवं सत्यापन की प्रक्रिया बताई गई। तृतीय दिवस में -क्या करें एवं क्या न करें- तथा डेटा सुरक्षा संबंधी महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तार से मार्गदर्शन प्रदान किया गया। साथ ही प्रणकों, पर्यवेक्षकों को फील्ड अभ्यास में परिवारों से संपर्क स्थापित करने की विधि, डेटा प्रविष्टि, त्रुटियों की पहचान, स्वगणना प्रक्रिया, नागरिकों से संपर्क की विधि, संवेदनशील परिस्थितियों में कार्य करने के तरीके एवं शिक्षाचार संबंधी शिक्षाचार प्रोटोकॉल एवं प्रश्न पृष्ठों की प्रक्रिया को व्यवहारिक अभ्यास के माध्यम से समझाया गया।

संक्षिप्त समाचार

एसडीएम सुश्री बघेल ने उपार्जन केंद्रों का किया औचक निरीक्षण



हरदा, (निप्र)। समर्थन मूल्य पर फसल उपार्जन की प्रक्रिया को संचालित करने के उद्देश्य से बुधवार को रिवर/किया एसडीएम सुश्री शिवांगी बघेल ने क्षेत्र के विभिन्न उपार्जन केंद्रों का औचक भ्रमण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने किसानों के लिए की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया और आधुनिक उपार्जन के आधुनिक दिशा-निर्देश दिए। भ्रमण के दौरान एसडीएम ने उपार्जन केंद्रों पर अनाज की तुलाई, गुणवत्ता परीक्षण और भंडारण की स्थिति की समीक्षा की। उन्होंने केंद्र प्रभारियों को सख्त निर्देश दिए कि किसानों को अपनी उपज बेचने में किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिए।

21 स्व-सहायता समूहों को उपार्जन कार्य की जिम्मेदारी, महिला सशक्तिकरण के साथ पारदर्शी व्यवस्था की ओर कदम

विदिशा, (निप्र)। विदिशा जिले में समर्थन मूल्य पर फसलों के उपार्जन कार्य को अधिक व्यवस्थित, पारदर्शी एवं सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से इस वर्ष 21 स्व-सहायता समूहों को उपार्जन केंद्रों के संचालन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। यह पहल न केवल उपार्जन प्रक्रिया को सुदृढ़ कर रही है, बल्कि ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम साबित हो रही है। जिले के विभिन्न उपार्जन केंद्रों पर चयनित स्व-सहायता समूहों द्वारा पंजीयन सत्यापन, तौल व्यवस्था, रिफॉर्ड संधारण एवं किसानों को आवश्यक मार्गदर्शन जैसे कार्यों का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया जा रहा है। इन समूहों को प्रशासन द्वारा पूर्व में प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिससे वे उपार्जन प्रक्रिया की बारीकियों को समझते हुए जिम्मेदारी का निर्वहन कर सकेंगे। उपार्जन कार्य में स्व-सहायता समूहों की सहभागिता से जहां एक ओर स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर सृजित हुए हैं, वहीं दूसरी ओर किसानों को भी अधिक सुगम एवं पारदर्शी सेवाएं प्राप्त हो रही हैं। समूहों की सक्रिय भागीदारी से केंद्रों पर अनुशासन, समयबद्धता और व्यवस्था में भी सुधार देखा जा रहा है। कलेक्टर अंशुल गुप्ता के मार्गदर्शन में यह नवाचार जिले में सफलतापूर्वक लागू किया गया है। प्रशासन द्वारा निरंतर मॉनिटरिंग कर यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि सभी केंद्रों पर कार्य संचालित हो और किसानों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। उल्लेखनीय है कि इस पहल के माध्यम से शासन की मंशा के अनुरूप 'आत्मनिर्भर समूह, सशक्त किसान' की अवधारणा को साकार किया जा रहा है। आने वाले समय में यह मॉडल अन्य क्षेत्रों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन सकता है, जहां सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से शासकीय कार्यों को प्रभावी बनाया जा सके।

कलेक्टर अंशुल गुप्ता ने नटेशन एवं ताज खजुरी का किया निरीक्षण, विभिन्न शासकीय सेवाओं की जमीनी हकीकत परखी

विदिशा, (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने आज नटेशन विकासखंड मुख्यालय सहित ग्राम ताज खजुरी का भ्रमण कर विभिन्न शासकीय योजनाओं एवं सेवाओं की जमीनी स्थिति का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने स्कूल शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, छात्रावास, आंगनवाड़ी केंद्र, उपार्जन केंद्र, उचित मूल्य दुकान एवं खाद विक्रय केंद्रों के माध्यम से आमजन को प्रदान की जा रही सुविधाओं का गहनता से जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री गुप्ता ने शासकीय स्कूलों में पहुंचकर विद्यार्थियों की उपस्थिति, शिक्षण व्यवस्था एवं शैक्षणिक गुणवत्ता की समीक्षा की। उन्होंने शिक्षकों को निर्देश दिए कि विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाए। स्वास्थ्य केंद्रों के निरीक्षण के दौरान उन्होंने उपलब्ध दवाइयों, स्टाफ की उपस्थिति एवं मरीजों को दी जा रही सेवाओं की जानकारी ली। उन्होंने स्वास्थ्य सेवाओं को और बेहतर बनाने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। छात्रावास एवं आंगनवाड़ी केंद्रों में व्यवस्थाओं का निरीक्षण करते हुए कलेक्टर ने बच्चों को दिए जा रहे पोषण आहार, स्वच्छता एवं अन्य सुविधाओं का अवलोकन किया तथा आवश्यक सुधार के निर्देश दिए। इसके अलावा उन्होंने उपार्जन केंद्रों का निरीक्षण कर गेहूं खरीदी की व्यवस्था, किसानों की सुविधा एवं पारदर्शिता सुनिश्चित करने पर जोर दिया। उचित मूल्य दुकानों एवं खाद विक्रय केंद्रों पर भी उन्होंने स्टॉक, वितरण पणाली एवं पात्र हितग्राहियों को मिल रही सामग्री की जांच की। कलेक्टर श्री गुप्ता ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी शासकीय योजनाओं का लाभ प्राप्त हितग्राहियों तक समय पर और प्रभावी रूप से पहुंचाया जाए तथा किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप जमीनी स्तर पर कार्य सुनिश्चित करना प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी है।

अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर ने राधास्वामी वेयरहाउस गेहूं उपार्जन केंद्र का किया निरीक्षण

विदिशा, (निप्र)। अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर ने आज राधास्वामी वेयरहाउस स्थित गेहूं उपार्जन केंद्र का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने समर्थन मूल्य पर हो रहे गेहूं उपार्जन की प्रक्रिया, किसानों की सुविधाओं तथा केंद्र पर उपलब्ध व्यवस्थाओं की विस्तृत समीक्षा की।



अपर कलेक्टर श्री डामोर ने केंद्र पर किसानों के पंजीयन, स्लॉट बुकिंग, तौल व्यवस्था, गुणवत्ता परीक्षण एवं भंडारण व्यवस्था का अवलोकन किया। उन्होंने उपस्थित किसानों से चर्चा कर उपार्जन प्रक्रिया में आ रही समस्याओं की जानकारी ली और उनके त्वरित निराकरण के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने निर्देश दिए कि उपार्जन केंद्र पर किसानों को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसके

लिए छाया, पेयजल, बैठने की व्यवस्था तथा समय पर तौल सुनिश्चित की जाए। साथ ही गेहूं की गुणवत्ता परीक्षण प्रक्रिया को पारदर्शी एवं नियमानुसार संचालित करने पर जोर दिया। अपर कलेक्टर ने वेयरहाउस में भंडारित गेहूं की सुरक्षा एवं रख-रखाव की स्थिति का भी निरीक्षण किया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि शासन की मंशानुसार किसानों को सुगम एवं पारदर्शी उपार्जन व्यवस्था उपलब्ध कराना प्रशासन की प्राथमिकता है।

'विकसित भारत 2047' के लक्ष्य की ओर कदम – अपर संचालक

विद्यार्थियों को दी जा रही व्यावसायिक शिक्षा

नर्मदापुरम, (निप्र)। बदलते समय के साथ शिक्षा का स्वरूप भी तेजी से परिवर्तित हो रहा है। अब शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों को रोजगार योग्य बनाने की दिशा में अग्रसर है। इसी क्रम में मध्यप्रदेश शिक्षा विभाग द्वारा संचालित व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम राज्य के लाखों छात्र-छात्राओं के भविष्य को नई दिशा दे रहा है। शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश के अपर संचालक एवं संयुक्त संचालक, लोक शिक्षण नर्मदापुरम श्री मनीष वर्मा ने बताया कि सरकार का उद्देश्य स्पष्ट है कि स्कूल स्तर से ही विद्यार्थियों को कौशलयुक्त बनाया जाए, ताकि वे केवल सरकारी नौकरी पर निर्भर न रहें, बल्कि स्वरोजगार के लिए भी सक्षम बन सकें। उन्होंने कहा कि कक्षा 9वीं से ही विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ा जा रहा है, जिससे 12वीं तक पहुंचते-पहुंचते उनके पास एक मजबूत कौशल विकसित हो सके।

उन्होंने जानकारी दी कि वर्ष 2025-26 तक प्रदेश के कुल 3367 स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा लागू की जा चुकी है। इनमें 3138 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में 22 प्रकार के व्यावसायिक ट्रेड संचालित हो रहे हैं, जबकि 229 हाई स्कूलों में एक-एक ट्रेड संचालित किया जा रहा है। इन स्कूलों में 2629 समग्र शिक्षा अभियान, 648 पीएम श्री योजना तथा 90 स्कूल स्टाफ स्क्रीम के अंतर्गत स्वीकृत हैं। वर्तमान में राज्य के 5,95,546 छात्र-छात्राएं विभिन्न व्यावसायिक ट्रेड एवं जांब रोल में

अक्षय तृतीया पर बाल विवाह रोकथाम हेतु कलेक्टर ने 7 दिवसीय कंट्रोल रूम सक्रिय

विदिशा, (निप्र)। अक्षय तृतीया के अवसर पर संभावित बाल विवाहों को रोकथाम के लिए जिला प्रशासन ने सख्त कदम उठाए हैं। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशन में कलेक्टर कार्यालय में 7 दिवसीय विशेष कंट्रोल रूम संचालित किया जा रहा है, जो 24 घंटे प्रभावी रहनेगा। जिला स्तरीय कंट्रोल रूम कलेक्टर कार्यालय के एकीकृत कंट्रोल रूम के कक्ष क्रमांक 225 में 16 अप्रैल 2026 से 22 अप्रैल 2026 तक संचालित रहेगा। आमजन बाल विवाह की सूचना मोबाइल नंबर 6269108974 पर दे सकते हैं। महिला एवं बाल विकास विभाग के श्री अनुज जैन (मो. 8109527228) को इस कंट्रोल रूम का प्रभारी नियुक्त किया गया है। सूचारू संचालन के लिए कर्मचारियों की ड्यूटी शिफ्टवार निर्धारित की गई है। प्रशासन द्वारा परियोजना स्तर पर भी कंट्रोल रूम स्थापित किए गए हैं, जहां संबंधित परियोजना अधिकारियों को प्रभारी बनाया गया है। इनके संपर्क नंबर जारी कर दिए गए हैं ताकि किसी भी सूचना पर तत्काल कार्रवाई की जा सके। परियोजना स्तर के प्रमुख संपर्क अधिकारी इस प्रकार हैं: श्री बी.पी. सिंह (गंजबासौदा-01) - 9425245237 श्री परितोष सोनकर (गंजबासौदा-02) - 9560926553 श्रीमती कृतिता व्यास (विदिशा ग्रामीण) - 7987156575 श्री अरुण कांत प्रजापति (म्यासपुर) - 8770109660 श्री ए.डी. डंगवाल (नटेशन) - 9827332534 श्रीमती सावित्री श्रीवास्तव (कुरवाई) - 9340517261 श्री आयुष अग्रवाल (सिरोंज) - 9131386317 श्रीमती कालोदिया तिकी (लटारी) - 7697313318 श्रीमती नेहा खुर्वशी (विदिशा शहरी) - 6265341716 इन सभी नंबरों पर 24 घंटे संपर्क किया जा सकता है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि कंट्रोल रूम में बाल विवाह की सूचना प्राप्त होते ही संबंधित क्षेत्र के बाल विवाह प्रतिषेध अधिकारी को तत्काल सूचित किया जाएगा तथा मौके पर पहुंचकर बाल विवाह को रोकने की कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

नारी शक्ति वंदन पखवाड़ा: छात्राओं में नेतृत्व, आत्मरक्षा और सशक्तिकरण का संचार

विदिशा, (निप्र)। राजमाता विजया राजे सिंधिया शासकीय कन्या (अग्रणी) स्नातकोत्तर महाविद्यालय, विदिशा में मध्यप्रदेश शासन के उच्च शिक्षा विभाग एवं कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशानुसार 10 से 25 अप्रैल तक 'नारी शक्ति वंदन' पखवाड़ा उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य महिलाओं की राजनीतिक, शैक्षणिक एवं प्रशासनिक भागीदारी को बढ़ावा देने के साथ उनकी नेतृत्व क्षमता का विकास करना है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. बी.डी. अहिखार के मार्गदर्शन में आयोजित इस पखवाड़े के अंतर्गत छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु विविध गतिविधियों का आयोजन किया गया। इसी क्रम में शासकीय आदर्श महाविद्यालय जाफरखेड़ी की शिक्षाविद् डॉ. अनिता शास्त्र्य द्वारा 'नारी शिक्षा के विभिन्न आयाम' विषय पर व्याख्यान दिया गया, जिससे छात्राओं को शिक्षा के महत्व और अवसरों की गहन जानकारी



प्राप्त हुई। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने पोस्टर एवं निबंध प्रतियोगिता के माध्यम से नारी सशक्तिकरण पर अपने विचार व्यक्त किए। वहीं आत्मरक्षा के क्षेत्र में सशक्त बनाने के उद्देश्य से अंतरराष्ट्रीय ब्लैक गोल्ड बेल्ट खिलाड़ी श्रीमती सोनम ठाकुर द्वारा जूडो-कराते का प्रशिक्षण दिया गया। इस दौरान छात्राओं को आत्मरक्षा के प्रति जागरूक करते हुए स्वयं की सुरक्षा का संकल्प भी दिलवाया गया। इसके अतिरिक्त महिला एवं बाल सुरक्षा तथा सामाजिक कार्य के क्षेत्र में कार्यरत श्रीमती मीनाक्षी ठाकुर ने छात्राओं को कार्यस्थल पर लैंगिक

समानता एवं महिला सुरक्षा विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। महाविद्यालय की वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो. नीता पांडे ने नारी शक्ति के महत्व पर प्रकाश डालते हुए छात्राओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का सफल संयोजन एवं संचालन डॉ. विनीता प्रजापति द्वारा किया गया। मंडल हेल्थ क्लब की प्रभारी प्रो. नीता दीक्षित, डॉ. मनोज अहिखार, श्रीमती अर्पिता तिवारी, शकुन अहिखार सहित बड़ी संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं।

शासन के निर्देशों के अनुरूप ही हो समर्थन मूल्य पर खरीदी

परिवहन और उठाव व्यवस्था में निरंतरता बनी रहे: कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा

कलेक्टर श्री मिश्रा ने जिला उपार्जन समिति की बैठक के दौरान दिए महत्वपूर्ण निर्देश

नर्मदापुरम, (निप्र)। 10:55 बूझ कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने जिले में संचालित गेहूं उपार्जन कार्य को लेकर स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि सभी आवश्यक दिशा-निर्देश उपार्जन कार्य में सतत प्रत्येक अधिकारी-कर्मचारी तक क्रमवार विस्तारपूर्वक प्रसारित किए जाएं। उन्होंने कहा कि किसी भी स्तर पर किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी तथा सभी व्यवस्थाएं सुचारू एवं चाक-चौबंद रहें, यह सुनिश्चित किया जाए। जिला उपार्जन समिति की बैठक के दौरान



कलेक्टर श्री मिश्रा ने निर्देश दिए कि उपार्जन के दौरान प्रत्येक विकासखंड में कानून एवं शांति व्यवस्था बनाए रखी जाए तथा किसी भी प्रकार की शिकायत प्राप्त न हो। उन्होंने कहा कि किसानों को समय पर स्लॉट बुकिंग तथा अन्य आवश्यक सूचनाओं आई जानकारी एसएमएस के माध्यम से मिलती रहे। कलेक्टर श्री मिश्रा ने मौसम विभाग द्वारा जारी पूर्वानुमान के मद्देनजर अधिकारियों को

सतर्क रहने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अचानक मौसम परिवर्तन की स्थिति में उपार्जन गेहूं को सुरक्षित रखने के लिए तिरपाल, शेड तथा अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं। उन्होंने यह भी निर्देशित किया कि उपार्जन स्थल का नियमित परिवहन निरंतर जारी रखा जाए। उठाव के लिए अनुबंधित परिवहन फर्म के पास उपलब्ध वाहनों की संख्या का आकलन किया जाए

कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने गेहूं उपार्जन केंद्रों का किया आकस्मिक निरीक्षण, किसानों से भी की चर्चा

रायसेन, (निप्र)। जिले में बनाए गए विभिन्न उपार्जन केंद्रों पर शासन के निर्देशानुसार गेहूं उपार्जन का कार्य किया जा रहा है। कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा द्वारा स्वयं जिले में विभिन्न उपार्जन केंद्रों का आकस्मिक निरीक्षण कर उपार्जन कार्य और केंद्रों पर किसानों की सुविधा हेतु की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया जा रहा है। इसके साथ ही सभी एसडीएम द्वारा भी अपने-अपने क्षेत्र में उपार्जन केंद्रों का नियमित निरीक्षण किया जा रहा है।



बुधवार को कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा द्वारा गेहूं उपार्जन केंद्र देवनागर स्थित शिव वेयरहाउस बिसनखेड़ा, उपार्जन केंद्र एक्सप्रेस वेयरहाउस गैरतपुर, पारसनाथ वेयरहाउस जमुनिया, आदर्श वेयरहाउस गैरतगंज, देवज्योति वेयरहाउस केसली, श्री हीरा वेयरहाउस तथा एचएस वेयरहाउस बाबई सहित अन्य उपार्जन केंद्रों का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। इस दौरान उन्होंने उपार्जन प्रक्रिया, उपज की

तुलाई, गुणवत्ता आदि का जायजा लिया तथा उपस्थित अधिकारियों और केंद्र प्रभारी से अभी तक उपार्जन गेहूं की मात्रा की जानकारी लेते हुए निर्देश दिए कि शासन की उपार्जन नीति के अनुरूप ही उपार्जन कार्य सम्पादित किया जाए।

साथ ही उपज विक्रय हेतु आए किसानों के लिए छायादार बैठक व्यवस्था, पेयजल आदि की समुचित व्यवस्थाओं के संबंध में निर्देश दिए। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने उपज विक्रय हेतु आए किसानों से भी उपज विक्रय हेतु स्लॉट बुकिंग सुगमता से होने, उपार्जन प्रक्रिया में लगने वाला समय और केंद्रों पर की गई व्यवस्थाओं के संबंध में चर्चा की। निरीक्षण के दौरान सहकारिता, कृषि सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

दूरस्थ ग्राम गदाखार पहुंचकर कलेक्टर डॉ सोनवणे ने ग्रामीणों से किया सीधा संवाद

जल संरक्षण कार्यों को प्राथमिकता देने पंचायत को सख्त निर्देश

बैतूल, (निप्र)। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने बुधवार को भीमपुर के दूरस्थ ग्राम गदाखार का भ्रमण कर ग्रामीणों से आत्मीय संवाद किया। उन्होंने ग्रामीणों से नल-जल योजना, आंगनवाड़ी केंद्र संचालन, पोषण आहार वितरण, स्वास्थ्य जांच एवं स्कूल व्यवस्थाओं की जानकारी ली। इस दौरान जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री अक्षय जैन एवं एसडीएम श्री अजीत मरावी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने पंचायत के प्रगतिरत कार्यों की समीक्षा करते हुए निर्देशित किया कि जिन क्षेत्रों में जल स्तर नीचे जा रहा है, वहां वाटर रिचार्ज के कार्य प्राथमिकता से किए जाएं। उन्होंने आंगनवाड़ी कार्यकर्ता से पोषण ट्रेकर एप की मौके पर जांच कराई, जिसमें नव धात्री माताओं का पंजीयन अपूर्ण पाए जाने पर नायबगी जताई। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी धात्री माताओं का समय पर पोर्टल पर पंजीयन सुनिश्चित किया जाए, ताकि उन्हें नियमित रूप से पोषण आहार मिल सके। साथ ही सीडीपीओ एवं सुपरवाइजर को ऐप की नियमित मॉनिटरिंग के निर्देश दिए। कलेक्टर ने ग्राम में संचालित 'एक बगिया में के नाम' कार्य का स्थल निरीक्षण कर जलकुंड, पौधरोपण एवं नाडेप की गुणवत्ता का जायजा लिया।

तहसील कार्यालय में लापरवाही पर रिडर को नोटिस : भीमपुर स्थित नवीन तहसील



कार्यालय के निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने नामांतरण, बंटवारा एवं अभिलेख दुरुस्ती जैसे राजस्व प्रकरणों की समीक्षा की। प्रकरणों के निराकरण में देरी पर असंतोष व्यक्त करते हुए उन्होंने तहसीलदार रिडर को नोटिस देने के निर्देश दिए। साथ ही सभी प्रकरणों का समयसीमा में प्राथमिकता से निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। खरीदी केंद्र को गुणवत्ता जांची : कलेक्टर डॉ सोनवणे ने बालाजी वेयरहाउस भीमपुर स्थित खरीदी केंद्र का निरीक्षण कर गेहूं की गुणवत्ता की जांच की। उन्होंने निर्देशित किया कि निर्धारित मानकों के अनुरूप ही उपार्जन एवं भंडारण किया जाए। साथ ही संबंधित अधिकारियों को सभी खरीदी केंद्रों का नियमित निरीक्षण करने के निर्देश दिए। आदर्श ग्राम पिपरिया में नल-जल व्यवस्था

की समीक्षा : कलेक्टर ने आदर्श ग्राम पिपरिया का भी भ्रमण कर ग्रामीणों से नल-जल योजना की जानकारी ली। उन्होंने पंचायत सचिव को निर्देशित किया कि पानी संबंधी समस्याओं का त्वरित निराकरण किया जाए और पर्याप्त संसाधनों के बावजूद योजना बंद रहने जैसी स्थिति निर्मित न हो।

जनगणना प्रशिक्षण का किया निरीक्षण : सादीपनी स्कूल भीमपुर में आयोजित जनगणना प्रशिक्षण का निरीक्षण करते हुए कलेक्टर डॉ सोनवणे ने प्रभागों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि जनगणना देश के समग्र विकास की आधारशिला है, इसलिए सभी बारीकियों को समझते हुए कार्य पूरी गंभीरता एवं संवेदनशीलता के साथ किया जाए।

कलेक्टर ने प्रशिक्षणार्थियों के साथ बैठकर जनगणना क्रियान्वित बिन्दुओं को जाना

विदिशा, (निप्र)। जनगणना-2027 के सफल क्रियान्वयन को लेकर जिला प्रशासन द्वारा व्यापक स्तर पर तैयारियां की जा रही हैं। इसी क्रम में कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी श्री अंशुल गुप्ता ने प्रशिक्षणार्थियों के साथ बैठकर जनगणना कार्यों से जुड़े महत्वपूर्ण बिंदुओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त की खासकर मास्टर ट्रेनर्स द्वारा दी जा रही जानकारी को बारीकी से परीक्षण किया है।

कलेक्टर श्री गुप्ता ने प्रशिक्षणार्थियों से सीधे संवाद करते हुए स्व-गणना प्रक्रिया, आंकड़ों की शुद्धता, समय-सीमा के पालन एवं फौलड स्तर पर आने वाली संभावित चुनौतियों पर चर्चा की। उन्होंने स्पष्ट किया कि जनगणना एक अत्यंत महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्य है, जिसमें प्रत्येक प्रभाग एवं पर्यवेक्षक की भूमिका अहम होती है।



जिले में 16 अप्रैल से 30

अप्रैल 2026 तक स्व-गणना (मैसर्स मदनउमर्तजपवद) की प्रक्रिया संचालित की जाएगी, जिसके अंतर्गत नागरिक स्वयं अपने परिवार से संबंधित जानकारी सॉफ्टवेयर में दर्ज करेंगे। इसके पश्चात 1 मई से 30 मई 2026 तक मकान सूचीकरण (ध्वनेम सेजपवद) का कार्य किया जाएगा। उक्त कार्यों के सफल संपादन हेतु चार्ज स्तर के प्रभागों एवं पर्यवेक्षकों के लिए नटेशन स्थित संदीपनी हाई स्कूल में विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया है। प्रशासन ने सभी प्रशिक्षणार्थियों से अपेक्षा की है कि वे प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान का प्रभावी उपयोग करते हुए जनगणना कार्य को समयबद्ध, पारदर्शी एवं त्रुटिरहित ढंग से संपन्न करें, जिससे जिले की सटीक एवं विश्वसनीय जनसंख्या आंकड़े तैयार हो।

तथा उनके नियमित रोटेशन की मॉनिटरिंग भी सुनिश्चित की जाए।

कलेक्टर श्री मिश्रा ने कहा कि समर्थन मूल्य पर की जा रही खरीदी में गेहूं की तुलाई, उठाव एवं स्टेकिंग के लिए हम्मालो एवं अन्य संसाधनों की किसी भी प्रकार की कमी न हो। साथ ही किसानों को उपज विक्रय के पश्चात भुगतान समय पर और शीघ्रता से किया जाए, इसके लिए जिला एवं खंड स्तरीय समितियां नियमित निगरानी करें। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि सभी उपार्जन केंद्रों पर शासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुरूप ही खरीदी की जाए तथा केवल एकफक्क्यू (उचित औसत गुणवत्ता) स्तर के गेहूं का ही उपार्जन सुनिश्चित किया जाए।

बैठक के दौरान छिटी कलेक्टर तथा प्रभारी जिला आपूर्ति अधिकारी श्रीमती नीता कोरी, उपसंचालक कृषि श्री रिवकांत सिंह, डीआरसीएस श्री शिवम मिश्रा सहित जिला उपार्जन समिति के अन्य सदस्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

दोनों हाथ शिथिल, पैरों से लिख 12वीं में किया टॉप छात्रा द्रोपदी का सम्मान करने खुद गई थी कलेक्टर, पिता हैं मजदूर

मंडला (नप्र)। हाल ही में मध्य प्रदेश में 10वीं और 12वीं क्लास का रिजल्ट घोषित किया गया है। छात्रा द्रोपदी ने पैरों से लिखकर 65 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। करीब दो साल पहले छात्रा द्रोपदी ने 10वीं की बोर्ड परीक्षा में पैरों से लिखकर प्रथम स्थान प्राप्त किया था। उस दौरान मंडला की तत्कालीन कलेक्टर डॉ. सलोनी सिडना खुद छात्रा से मुलाकात करने के लिए उसके गांव गई थीं और उसे पढ़ाई के लिए मोटिवेट किया था।



तत्कालीन कलेक्टर ने द्रोपदी का सम्मान किया था और उसका उत्साहवर्धन भी किया था। कलेक्टर से मिलने के बाद द्रोपदी ने अपनी आगे की पढ़ाई जारी रखने का फैसला किया था। उस समय द्रोपदी ने कलेक्टर से कहा था कि वह आगे पढ़ाई करेगी और भविष्य में एक अफसर बनकर समाज की सेवा करेगी।

जन्म से शिथिल हैं दोनों हाथ- द्रोपदी भीमडोगरी स्कूल की छात्रा हैं। 12वीं की परीक्षा में 65 प्रतिशत अंक हासिल कर उसने सबको हैरान कर दिया है। जन्म से दोनों हाथों के शिथिल होने के कारण द्रोपदी पैरों से लिखती हैं, लेकिन उसके हासिले किसी भी बाधा से नहीं ऊंचे हैं। छात्रा के परिजनों ने भी बेटी की कुशलता को देखने हुए उसकी पढ़ाई आगे जारी रखने का फैसला किया।

पैरों से लिखने की शुरुआत की- द्रोपदी धुर्वे मर्वई विकासखंड के करौंदा टोला की रहने वाली हैं। छात्रा दोनों हाथ से दिव्यांग हैं। बावजूद इसके उसके जच्चे से उसका अध्ययन जारी है। वह अपने पैरों में पेन फंसाकर लिखती हैं। छात्रा के दोनों हाथ जन्म से ही शिथिल हैं।

भोपाल में कर्मशियल गैस को लेकर नई व्यवस्था ; 2 सिलेंडर मिलेंगे

जिन घरों में शादी, उन्हें देना होगा शादी का कार्ड



भोपाल (नप्र)। भोपाल में शादी सीजन शुरू होते ही कर्मशियल गैस सिलेंडर की कमी को देखते हुए नई व्यवस्था लागू की गई है। अब जिन घरों में शादी है, उन्हें पास की गैस एजेंसी पर शादी का कार्ड जमा कराना होगा। इसके बाद ही अधिकतम दो कर्मशियल सिलेंडर दिए जाएंगे।

प्रत्येक सिलेंडर के लिए 2200 रुपए डिपॉजिट देना होगा। दो सिलेंडर के लिए कुल 4400 रुपए जमा कराए जाएंगे, जो इस्तेमाल के बाद सिलेंडर लौटाने पर वापस कर दिए जाएंगे। हालांकि, गैस भरवाने का शुल्क अलग से 1850 रुपए प्रति सिलेंडर देना होगा। सिलेंडर 2 से 3 दिन के भीतर एजेंसी पर लौटाना अनिवार्य रहेगा।

कंपनियों से चर्चा के बाद व्यवस्था- भोपाल के फूड कंट्रोलर चंद्रभान सिंह जादौन ने बताया कि सभी एलपीजी कंपनियों के अधिकारियों से चर्चा के बाद यह व्यवस्था लागू की गई है। इसके लिए शादी का कार्ड, पहचान पत्र और एक आवेदन देना होगा, जिसमें शादी की तारीख, समय और स्थान की जानकारी देनी होगी।

प्रदेश में 43 डिग्री की झुलसाती गर्मी में लग रहे स्कूल बच्चे बोले-अब तो छुट्टी करा दीजिए सीएम अंकल ; 20 जिलों में आज लू की चेतावनी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में सूरज के तेवर तल्लू हो चुके हैं। पारा 43 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच गया है। आसमान से बरसती इस आग के बीच बच्चे स्कूल जाने को मजबूर हैं, जिससे उनका हाल बेहाल है। चिलचिलाती धूप और पसीने से तर-बतर बच्चे अब एक ही मांग कर रहे हैं- सीएम अंकल, बहुत गर्मी है, अब तो छुट्टियां कर दीजिए! मौसम विभाग ने आज 20 जिलों में भीषण लू का अलर्ट जारी किया है। हालांकि, कुछ जिलों में स्कूलों का समय बदला गया है। रायसेन और अनूपपुर में स्कूलों का समय सुबह 7:30 से दोपहर 12 तक कर दिया गया है। डिंडोरी में भी नर्सरी से 8वीं तक के सभी स्कूल सुबह साढ़े 7 बजे से दोपहर 12 बजे तक ही लगाए जाएंगे। मैहर में भी कलेक्टर बिदिशा मुखर्जी ने स्कूलों के समय में बदलाव किया है। यहाँ अब नर्सरी से 12वीं तक के सभी स्कूल सुबह 7:30 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक ही लगेंगे।



नर्मदापुरम में 43 डिग्री, रतलाम में 42 डिग्री तापमान- गुरुवार को नर्मदापुरम का तापमान 43 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया, जो सीजन का सबसे ज्यादा है। वहीं, रतलाम, धार, छिंदवाड़ा, पाटणा, सिवनी, मंडला और बालाघाट में लू जैसे हालात रहे। नर्मदापुरम के बाद रतलाम दूसरा सबसे गर्म शहर रहा, यहाँ अधिकतम तापमान 42.8 डिग्री दर्ज किया गया। दमोह-मंडला में 42 डिग्री, शाजापुर में 41.8 डिग्री, गुना में 41.7 डिग्री, मलाजखंड, टीकमगढ़-छिंदवाड़ा में 41.5 डिग्री, धार-उमरिया-श्यापुर में 41.4 डिग्री, धार-खजुराहो में 41 डिग्री, सतना में 40.9 डिग्री, खरगोन में 40.8 डिग्री, सागर में 40.7 डिग्री, दतिया-सीधी में 40.6 डिग्री, खंडवा-बेतूल में 40.5 डिग्री, सिवनी-रीवा में 40.4 डिग्री और नौगांव में पारा 40.2 डिग्री सेल्सियस पारा रहा।

नर्मदापुरम में भीषण गर्मी, स्कूलों का समय बदला- नर्मदापुरम में भीषण गर्मी को देखते हुए जिला कलेक्टर ने स्कूलों के समय में बदलाव कर दिया है। बढ़ते तापमान के कारण छात्रों की सेहत को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया है। अब जिले के सभी शासकीय और निजी स्कूल सुबह 7:30 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक ही संचालित होंगे। यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया गया है, ताकि गर्मी के बीच विद्यार्थियों को राहत मिल सके।

ट्रेक्टर ट्रॉली पलटने से 4 महिलाओं की मौत, 26 घायल श्योपुर से 4 ग्वालियर रेफर, कई गंभीर, मदद के लिए चीखते-चिल्लाते रहे लोग

श्योपुर (नप्र)। मध्य प्रदेश के श्योपुर जिले में गुरुवार रात तेज रफ्तार ट्रेक्टर ट्रॉली पलटने से 4 महिलाओं की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 28 लोग घायल हो गए। इनमें से 4 लोगों को ग्वालियर रेफर किया गया है। हदसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई। लोग मदद के लिए चिल्लाते रहे। मामला विजयपुर थाना क्षेत्र के खितरपाल गांव का है। जानकारी के मुताबिक, मृतकों की पहचान सरोज गुर्जर, सुनैना गुर्जर, सोमा गुर्जर और गीता राव के रूप में हुई है। ट्रेक्टर से बीरपुर थाना क्षेत्र के घूंघस गांव से विजयपुर थाना क्षेत्र के झारबडौदा गांव भात मांगने कार्यक्रम में शामिल होने के लिए जा रहे थे।



मुख्यमंत्री मोहन यादव ने हदसे पर दुख व्यक्त किया है। उन्होंने मृतकों के परिजनों को 4 लाख रुपए, गंभीर रूप से घायलों को 1 लाख रुपए और अन्य घायलों को 50,000 रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान करने के निर्देश दिए हैं।

ट्रेक्टर के नीचे दबे लोगों को बाहर निकाला

ट्रॉली के अंदर ज्यादातर महिलाएं और बच्चे थे। विजयपुर से 3 किलोमीटर पहले खितरपाल गांव के पास ट्रेक्टर अनबलेंस हो गया। इससे ट्रॉली पलट गई। घायलों में कई की हालत गंभीर बताई जा रही है। स्थानीय लोगों ने तुरंत राहत कार्य शुरू किया। ट्रेक्टर के नीचे दबे लोगों को बाहर निकाला। नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया।

मुख्यमंत्री ने दुःख व्यक्त कर मृतकों के परिजन को 4-4 लाख रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए निर्देश

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने श्योपुर जिले के विजयपुर थाना क्षेत्र के खितरपाल गांव में ट्रेक्टर-ट्रॉली पलटने से महिलाओं के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मृतकों के परिजन को राज्य शासन की ओर से 4-4 लाख रुपए, गंभीर रूप से घायलों को 1-1 लाख रुपए एवं अन्य घायलों को 50-50 हजार रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ईश्वर से दिवंगतों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि दुर्घटना में जो घायल हुए हैं, उनको उपचार प्रदान किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने की भी कामना की।

सिंगरौली में बैंक रॉबरी

5 हथियारबंद बदमाशों ने बैंक ऑफ महाराष्ट्र से 35 लाख लूटे

सिंगरौली (नप्र)। सिंगरौली में बैंक रॉबरी का सनसनीखेज मामला सामने आया है। शहर में स्थित बैंक ऑफ महाराष्ट्र में शुक्रवार दोपहर को 5 हथियार बंद बदमाशों ने घुसकर जमकर उठाव मचाया। पूरे बैंक को बंधक बना लिया और मैनेजर को बंदूक की बट से मारकर घायल कर नकदी से भरी पेटी और कैश कलेक्शन काउंटर को लूट लिया। लुटेरों नकदी सहित सोना-चांदी सहित करीब 35 लाख की लूट करके बड़े आराम से निकल गए।

पुलिस से मिली जानकारी अनुसार सिंगरौली के बैद्वन क्षेत्र में स्थित बैंक ऑफ महाराष्ट्र की बांच में रोजमर्रा की तरह काम चल रहा था। दोपहर करीब एक बजे दो बदमाश हथियार लेकर बैंक में घुसते हैं। एक बदमाश ने सिर पर हेलमेट लगा रखा था। उन्होंने हथियार लहराते हुए लोगों को चुप रहने के लिए बोला और सीधे मैनेजर को पकड़ लिया। इसी दौरान पीछे से तीन और हथियार बंद बदमाश बैंक के अंदर आ गए। सभी ने बैंक में जमकर धमकाया, उत्पात मचाया। चंद मिनटों में वे लूट की बड़ी वारदात को अंजाम देकर भाग गए।

बैंक मैनेजर पर बट से हमला, चाबियां छीनने के लिए मारपीट- पुलिस के अनुसार बदमाशों ने पूरे बैंक को बंधक बनाया था। पहले आए दो बदमाशों



ने बैंक मैनेजर सहित कर्मचारियों पर बंदूक तान दी थी। बाद में आए तीन और बदमाशों ने शाहकों व अन्य कर्मचारियों को भी बंदूक की दम पर बंधक बना लिया। पुलिस के अनुसार मैनेजर ने जब चुप रहने के लिए बोला और सीधे मैनेजर को पकड़ लिया। इसी दौरान पीछे से तीन और हथियार बंद बदमाश बैंक के अंदर आ गए। सभी ने बैंक में जमकर धमकाया, उत्पात मचाया। चंद मिनटों में वे लूट की बड़ी वारदात को अंजाम देकर भाग गए।

नकदी से भरी पेटी, कैश काउंटर लूट ले गए- जानकारी अनुसार बदमाश करीब 20 मिनट तक बैंक के अंदर रहे, उन्होंने बैंक से नकदी से भरी पेटी, कैश काउंटर का कलेक्शन, सोना-चांदी लूट लिया और फरार हो गया। बैंक से करीब 30 से 35 लाख रुपए की लूट होना बताया जा रहा है। घटना के समय बैंक के गेट या अंदर कोई भी गार्ड मौजूद नहीं था। लुटेरों भागते समय बैंक के अपोजिट साइड में सड़क के दूसरी तरफ एक दुकान के सीसीटीवी कैमरे में दिखाई दे रहे हैं। पुलिस अधिकारी, सिंगरौली ने बताया दोपहर में बैंक आफ महाराष्ट्र में लूट की वारदात हुई है। हथियारबंद लुटेरों करीब 14.50 लाख रुपए सहित आज का कलेक्शन ले गए। सोना-चांदी भी है। मामले में जांच की जा रही है।

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस बल सहित एसपी मनीष खत्री भी मौके पर पहुंच गए थे। पुलिस ने तत्काल शहर के सभी बाहरी की ओर जाने वाले मार्गों को सील कर दिया।

भोपाल की बेटी ने रचा इतिहास

56 साल की उम्र में माउंट किलिमंजारो फतह

भोपाल। अदम्य साहस और दृढ़ निश्चय की मिसाल पेश करते हुए, भारतीय स्टेट बैंक, भोपाल में सहायक महाप्रबंधक के पद पर कार्यरत सुनीता सिंह ने अफ्रीका की सबसे ऊँची चोटी माउंट किलिमंजारो पर सफलतापूर्वक तिरंगा और स्टेट बैंक का झंडा फहराया।

56 वर्ष 5 माह की आयु में 15 अप्रैल 2026 को उन्होंने 5 हजार 895 मीटर ऊँची इस चोटी को फतह कर सबसे उम्रदराज भारतीय महिला पर्वतारोही बनने का गौरव हासिल किया। शिखर पर पहुँचकर उन्होंने बैंक और देश का प्रतिनिधित्व करने पर गर्व व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि तमाम विपरीत परिस्थितियों, मौसम, उम्र और कामकाजी व्यस्तता के बाद भी यहाँ तक पहुँचना उनके लिए एक बड़ी उपलब्धि है। अब इस सफलता से उत्साहित होकर वे और नए लक्ष्य हासिल करना चाहती हैं।

अपने पर्वतारोहण से जुड़े अनुभव साझा करते हुए उन्होंने बताया, बैंकिंग की व्यस्त नौकरी के साथ पर्वतारोहण के सपने को पूरा करना आसान नहीं था। इस उम्र में प्रशिक्षण और प्रोफेशनल जिम्मेदारियों में संतुलन बनाना सभी की राह में बाधा नहीं बनते। लेकिन बैंक के अनुशासन और सेवा के



संस्कारों ने मुझे यह इम्पट दी। स्टेट बैंक के सहकर्मियों ने इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए इसे कामकाजी महिलाओं और पेशेवरों के लिए प्रेरणा बताया है। सुनीता सिंह की इस सफलता ने यह साबित कर दिया कि उम्र और नौकरी, सपनों की राह में बाधा नहीं बनते। पर्वतारोही सुनीता सिंह ने इससे

पहले यूरोप की सबसे ऊँची चोटी माउंट एल्ब्रस पर भी तिरंगा लहराकर इतिहास रच दिया था। सुनीता ने 24 अगस्त 2025 को इस 18,510 फीट ऊँचे इस शिखर को फतह किया था। सुनीता सिंह ने जबलपुर की हैं और उन्होंने अपनी पूरी शिक्षा रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय से हासिल की है।

डॉ. भार्गव राष्ट्रीय उत्कृष्टता सम्मान से अलंकृत



नई दिल्ली। रिटायर्ड आईएएस, मोटिवेशनल स्पीकर अशोक भार्गव को नई दिल्ली में हयात होटल में आयोजित भव्य समारोह में राष्ट्रीय उत्कृष्टता अवार्ड से सम्मानित किया गया। डॉ. भार्गव को यह प्रतिष्ठित सम्मान मुख्य अतिथि क्रिकेटर मदनलाल एवं कैमरून गणराज्य की उच्चायुक्त सुश्री सिल्वी मिशेल मपोन टिएक मान्बो द्वारा प्रदान किया गया। डॉ. भार्गव को यह

अवार्ड उनके द्वारा सार्वजनिक स्वास्थ्य, चिकित्सा, कोविड नियंत्रण, महिला सशक्तिकरण, सर्वोत्तम निर्वाचन प्रक्रिया, शिक्षा में गुणात्मक सुधार, उत्तरदायी एवं संवेदनशील सुशासन, स्वतंत्र लेखन एवं राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय मंचों पर राष्ट्रभाषा हिंदी तथा नागरी लिपि के विकास आदि के क्षेत्र में स्थापित किए गए उल्लेखनीय कीर्तिमानों के लिए प्रदत्त किया गया है।



हमारी जनगणना हमारा विकास



(जनगणना 2027 का पहला चरण)

स्व-गणना (Self Enumeration) से जुड़े सामान्य प्रश्न और उत्तर (भाग-2)

स्व-गणना क्या है?

स्व-गणना एक ऑनलाइन प्रक्रिया है जिसमें आप प्रणाली की प्रतीक्षा किए बिना, स्वयं SE पोर्टल (se.census.gov.in) पर अपने परिवार की जानकारी भर सकते हैं

- स्व-गणना के क्या लाभ हैं?
 - अपनी सुविधा से जानकारी भर सकते हैं
 - गोपनीयता सुनिश्चित
 - जनगणना प्रक्रिया को तेज़ और कुशल बनाती है
- स्व-गणना पोर्टल में लॉग-इन कैसे करें?
 - राज्य / संघ राज्य क्षेत्र चुनें
 - मुखिया का नाम, मोबाइल नंबर और ईमेल (वैकल्पिक) भरें
 - OATP द्वारा सत्यापन करें
 - स्व-गणना शुरू करें
- अपने घर का सही स्थान कैसे चिह्नित करें?
 - जिला / पिनकोड चुनें
 - क्षेत्र / लैंडमार्क दर्ज करें
 - नेप पट जूम करें और घर के पास लोकेशन मार्क करें (सटीक पता न दिखने पर घबराएं नहीं)
 - सही लोकेशन चिह्नित करना आवश्यक है
- क्या मैं अपनी जानकारी बाद में संशोधित कर सकता / सकती हूँ?
 - सबमिटेड करने से पहले एडिट कर सकते हैं
 - सबमिशन के बाद, प्रणाली के आने पर ही बदलाव संभव होगा
- क्या स्व-गणना (SE) पोर्टल को भारत के बाहर से एक्सेस किया जा सकता है?
 - नहीं, यह सुविधा केवल भारत की भौगोलिक सीमा के भीतर उपलब्ध है
- यदि सबमिशन के बाद गलती पता चले तो क्या करें?
 - प्रणाली के आने पर SE ID के साथ सुधार करवाया जा सकता है
- क्या मैं फॉर्म सेव करके बाद में पूरा कर सकता / सकती हूँ?
 - हां, आप प्रोग्रेस सेव कर सकते हैं और निर्धारित समय के भीतर फॉर्म पूरा कर सकते हैं

टोल फ्री - 1855

चलो निभाएं अपनी ज़िम्मेदारी, करें जनगणना में भागीदारी

CensusIndia2027